E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 125 | प्रयागराज, शुक्रवार 31 जुलाई, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

ईरान-अमेरिका जंग में पहली बार मिस्र पर हमला,गैस से लदे दो जहाजों में आग लगी,दमियाता पोर्ट पर ड्रोन अटैक-ईरान पर आरोप

वॉशिंगटन डीसी/ तेहरान/ तेल अवीव। ईरान-अमेरिका के बीच जारी जंग अब मिस्र तक

पहुंच गई है। न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक मिस्र सरकार ने गुरुवार को बताया कि बुधवार को दमियाता पोर्ट पर दो गैस टैंकरों में लगी आग हादसा नहीं, बल्कि ड्रोन हमले का नतीजा थी। रिपोर्ट्स के मुताबिक ड्रोन ने अमेरिकी कंपनी के नैचुरल गैस स्टोरेज टैंकर एनरगोस विंटर को निशाना बनाया, जिसके बाद आग पास में खड़े दूसरे टैंकर गैसलॉग सलेम तक फैल गई। हालांकि, दमकल टीम ने जल्द ही आग पर काबू पा लिया और कोई हताहत नहीं हुआ। इस हमले के पीछे ईरान का हाथ बताया जा रहा है। न्यूयॉर्क टाइम्स ने दो ईरानी सूत्रों के हवाले से दावा किया है कि हमले का मकसद यह मैसेज देना था कि अगर जंग और बढ़ी तो दुनिया की समुद्री शिपिंग और एनर्जी सप्लाई भी गंभीर रूप से प्रभावित हो सकती है। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स-1. ट्रम्प ने ईरान को फिर दी सैन्य कार्रवाई की चेतावनीः अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि अगर हालात बिगड़े तो अमेरिका ईरान पर 'बहुत जोरदार हमला' करेगा। हालांकि, उन्होंने भविष्य में समझौते की संभावना से भी इनकार नहीं किया। 2. अमेरिका-सऊदी के संयुक्त हमले, इराक में 20 पीएमएफ़ लड़ाके मारे गएः अमेरिका और सऊदी अरब ने इराक में ईरान समर्थित पीएमएफ़ के ठिकानों पर संयुक्त हवाई हमले किए। पीएमएफ़ के मुताबिक, हमलों में कम से कम 20 लड़ाके मारे गए और कई अन्य घायल हुए। 3. मिस्र के बंदरगाह पर अमेरिकी गैस टैंकर पर ड्रोन हमलाः मिस्र के दमियत्ता पोर्ट पर अमेरिकी गैस स्टोरेज टैंकर को ड्रोन से निशाना बनाया गया।

हमले के बाद आग लग गई, लेकिन प्रशासन ने हालात पर जल्द काबू पा लिया।

4. कच्चे तेल का भाव 90 डॉलर के करीब, 100 डॉलर तक जाने की आशंकाः मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव के बीच ब्रेंट क्रूड करीब 90 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गया।

एक्सपर्ट्स का मानना है कि हालात और बिगड़े तो कीमत 100 डॉलर तक जा सकती है। 5. ईरान बोला- हमारी इजाजत के बिना होर्मुज से कोई जहाज नहीं गुजरेगाः ईरानी नौसेना ने कहा कि उसकी अनुमति के बिना किसी जहाज की आवाजाही नहीं हो सकती।ईरान जंग से दूर रहना चाहते हैं अरब देश-ईरान-इजराइल जंग के बीच अरब देश खुद को इस संघर्ष से दूर रखना चाहते हैं। मिडिल ईस्ट मामलों के जानकार फेलो जैदोन अलकिनानी ने अल जजीरा से बातचीत में कहा कि इस संघर्ष के सबसे करीब मौजूद सभी अरब देशों का एक ही मकसद है- किसी भी हाल में सीधे टकराव का हिस्सा बनने से बचना। उनके मुताबिक ईरान और इजराइल दोनों चाहते हैं कि जंग का दायरा बढ़े और दूसरे देश भी इसमें किसी न किसी तरीके से शामिल हों। अलकिनानी के मुताबिक ईरान चाहता है कि अरब देशों को महसूस हो कि उनकी सुरक्षा भी इस जंग से जुड़ी हुई है। अगर मौजूदा संघर्ष की बात करें, तो ईरान पहले ही इराक, कुवैत, कतर और बहरीन जैसे देशों में हमले कर चुका है। वहीं, सऊदी अरब ने इसी हफ्ते इराक में मौजूद ईरान समर्थक लड़ाकों के ठिकानों पर हमले किए हैं।

अमेरिका ने इंसानों जैसे दिखने वाले रोबोट पर लगाई रोक, देश की सुरक्षा को खतरा बताया

चीन बोला- बेवजह हमारी कंपनियों को निशाना बनाना गलत

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका ने चीन समेत दूसरे देशों से आने वाले इंसानों जैसे दिखने वाले (ह्यूमनॉइड) और चार पैरों पर चलने वाले (क्वाड्रुपेड) रोबोट के आयात पर रोक लगा दी है। अमेरिका के फेडरल कम्युनिकेशंस कमीशन (एफसीसी) ने इस फैसले के पीछे राष्ट्रीय सुरक्षा और साइबर सुरक्षा से जुड़े जोखिमों का हवाला दिया है। हालांकि यह प्रतिबंध सिर्फ उन रोबोट पर लागू होगा जो अभी अमेरिका नहीं पहुंचे हैं। पहले से इस्तेमाल हो रहे रोबोट इस फैसले के दायरे में नहीं आएंगे। इस फैसले पर चीन ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। वॉशिंगटन स्थित चीनी दूतावास ने आरोप लगाया कि अमेरिका बिना किसी सबूत के चीनी कंपनियों को निशाना बना रहा है। चीन ने कहा कि वह अपने हितों की रक्षा के लिए जरूरी जवाबी कदम उठाएगा। अमेरिका ने विदेशी रोबोट पर रोक क्यों लगाई? अमेरिका का मानना है कि अगर देश की जरूरी सेवाओं में विदेशी कंपनियों के रोबोट का इस्तेमाल बढ़ता गया, तो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बढ़ सकता है। सरकार को आशंका है कि किसी विवाद या तनाव की स्थिति में इन रोबोट की सप्लाई प्रभावित हो सकती है। इसके अलावा साइबर हमलों के जरिए बिजली ग्रिड, संचार नेटवर्क और दूसरे अहम सिस्टम को भी निशाना बनाया जा सकता है। यह फैसला ऐसे समय आया है, जब अमेरिका और चीन के बीच एआई, रोबोटिक्स और दूसरी उन्नत तकनीकों में बढ़त हासिल करने की होड़ तेज है। अमेरिका चाहता है कि भविष्य की अहम तकनीकों के लिए उसकी निर्भरता विदेशी कंपनियों पर कम हो और घरेलू कंपनियां मजबूत बनें। चीन पर सबसे ज्यादा असर क्यों पड़ेगा? प्रतिबंध सभी विदेशी कंपनियों पर लागू होगा, लेकिन इसका सबसे बड़ा असर चीन पर पड़ने की उम्मीद है। वजह यह है कि चीन आज दुनिया का सबसे बड़ा रोबोट निर्माता और सबसे बड़ा बाजार बन चुका है। 2024 में चीन ने अपने कारखानों में 2.95 लाख औद्योगिक रोबोट लगाए, जबकि अमेरिका ने सिर्फ 34,200 रोबोट लगाए। यानी चीन ने अमेरिका से करीब 9 गुना ज्यादा रोबोट लगाए। इस समय चीन के कारखानों में 20 लाख से ज्यादा औद्योगिक रोबोट काम कर रहे हैं, जबकि अमेरिका में इनकी संख्या करीब 3.94 लाख है। अमेरिका में इस्तेमाल होने वाले ज्यादातर औद्योगिक रोबोट जापान और यूरोप से आते हैं। लेकिन ह्यूमनॉइड रोबोट के क्षेत्र में चीन तेजी से सबसे आगे निकल चुका है। पिछले साल अमेरिका ही चीन में बने ह्यूमनॉइड रोबोट का सबसे बड़ा विदेशी खरीदार था। ह्यूमनॉइड रोबोट में चीन कितना आगे है? विशेषज्ञों का कहना है कि सबसे उन्नत एआई मॉडल विकसित करने में अमेरिका अभी भी बढ़त बनाए हुए है। हालांकि, चीन ने कम समय में कई नए एआई मॉडल पेश किए हैं और एआई से चलने वाले ह्यूमनॉइड रोबोट के उत्पादन में बड़ी छलांग लगाई है। एपी के मुताबिक, दुनिया में तैनात करीब 85फीसदी ह्यूमनॉइड रोबोट चीन के हैं। वहीं मॉर्गन स्टेनली का अनुमान है कि 2030 तक चीन का ह्यूमनॉइड रोबोट बाजार 15 अरब डॉलर का हो सकता है।रिसर्च फर्म ओम्डिया के मुताबिक, 2025 में दुनिया भर में करीब 15 हजार ह्यूमनॉइड रोबोट भेजे गए। इनमें चीन की यूनिट्री और एजीआईबॉट ने अकेले 5-5 हजार से ज्यादा रोबोट की सप्लाई की। इसके मुकाबले अमेरिकी कंपनियां टेस्ला और फिगर एआई कुछ सौ रोबोट ही भेज सकीं। अमेरिका की चीन पर सख्त पॉलिसी-1. एआई चिप्स के निर्यात पर रोक अमेरिका ने 2022 में चीन को एनवीडिया और एएमडी जैसी कंपनियों के सबसे उन्नत एआई चिप्स बेचने पर रोक लगा दी। बाद में इन प्रतिबंधों को और सख्त किया गया।

अमेरिका को लगता है कि अगर चीन को ये सुपर-फास्ट चिप्स मिल गए, तो वह इनका इस्तेमाल अपनी सेना को ताकतवर बनाने में करेगा। 2. हुवावे और जेडटीई पर कार्रवाई अमेरिका ने हुवावे और जेडटीई को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बताते हुए सरकारी नेटवर्क से बाहर कर दिया। हुवावे को अमेरिकी तकनीक और गूगल की कई सेवाओं तक पहुंच भी सीमित कर दी गई। 3. टिकटॉक विवाद अमेरिका लंबे समय से टिकटॉक पर अमेरिकी यूजर्स का डेटा चीन तक पहुंचने की आशंका जताता रहा है। इसी वजह से टिकटॉक पर कई बार प्रतिबंध लगाने या उसके अमेरिकी कारोबार को किसी अमेरिकी कंपनी को बेचने की मांग की गई।

जम्मू-कश्मीर और उत्तराखंड में लैंडस्लाइड, रोकी गई केदारनाथ यात्रा,हरिद्वार में कांवड़िया बहा, राजस्थान समेत 16 राज्यों में बारिश का ऑरेंज अलर्ट

जयपुर/लखनऊ/पटना। देशभर में तेज बारिश का दौर जारी है। मौसम विभाग ने गुरुवार को राजस्थान समेत 16 राज्यों में बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। मध्य महाराष्ट्र, मराठवाड़ा, विदर्भ और तेलंगाना में रेड अलर्ट है। रेड अलर्ट का मतलब है 24 घंटे में 204एमएम से ज्यादा बारिश। उत्तराखंड में रुद्रप्रयाग के गौरीकुंड के पास लैंडस्लाइड होने से केदारनाथ यात्रा लगातार तीसरे दिन बंद है। पहाड़ी-मैदानी इलाकों में लगातार हो रही बारिश से हरिद्वार में गंगा खतरे के निशान

के करीब पहुंच गई है। गंगाजल भरने गए कांवड़िए को एसडीआरएफ टीम ने बहने से बचा लिया। उत्तर प्रदेश के बलिया में सरयू नदी का कटाव तेज हो गया है। पानी गांवों में घुस गया है। **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

न्यूयॉर्क टाइम्स ने पीओके को 'पाकिस्तानी कश्मीर' बताया, भारत ने कहा- यह हमारा अभिन्न हिस्सा

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी अखबार न्यूयॉर्क टाइम्स करने और वहां रहने वाले लोगों के खिलाफ हिंसा करने का

(एनवाईटी) ने अपनी एक रिपोर्ट में पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) को 'पाकिस्तानी कश्मीर' बताया। इसके बाद अमेरिका स्थित भारतीय दूतावास ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर आपत्ति दर्ज कराते हुए कहा कि 'पाकिस्तानी कश्मीर' जैसा कुछ नहीं है, केवल पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर (पीओके) है। दूतावास ने कहा कि जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के पूरे केंद्र शासित प्रदेश भारत के अभिन्न और अविभाज्य हिस्से हैं तथा हमेशा रहेंगे। भारत ने पाकिस्तान पर जम्मू-कश्मीर के कुछ हिस्सों पर अवैध कब्जा आरोप भी लगाया। साथ ही कहा कि इस मुद्दे पर भारत का रुख पहले से स्पष्ट और अपरिवर्तित है।

दरअसल, न्यूयॉर्क टाइम्स ने पीओके में हालिया अशांति और स्थानीय चुनावों पर प्रकाशित रिपोर्ट में इस क्षेत्र को 'पाकिस्तानी कश्मीर' कहा था। रिपोर्ट में मीरपुर में सुरक्षा बलों और जॉइंट अवामी एक्शन कमेटी (जेए एसी) के बीच झड़प, दो लोगों की मौत और चुनावी प्रक्रिया पर पड़े असर का भी जिक्र किया गया। अखबार ने यह भी कहा कि प्रदर्शनकारियों के कुछ दावों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो सकी है।

जापान में भूकंप से मौतों का आंकड़ा 28 पहुंचा, मॉल के मलबे में रेस्क्यू जारी

यात्सुशिरो। जापान के कुमामोटो प्रांत में 28 जुलाई को आए 7.1 तीव्रता के भूकंप में मरने वालों की संख्या बढ़कर 28 हो गई है। कुमामोटो प्रशासन ने बताया है कि राहतकर्मी अब भी ढहे हुए एयॉन शॉपिंग मॉल के मलबे में फंसे लोगों की तलाश कर रहे हैं। वहीं, हजारों लोग बिजली-पानी के बिना भीषण गर्मी झेल रहे हैं।अधिकारियों के अनुसार, मॉल से अब तक 10 लोगों को बाहर निकाला गया है। इनमें 4 की मौत हो चुकी है, एक व्यक्ति की हालत गंभीर है और 5 लोग घायल हैं। राहतकर्मी अब भी मलबे में फंसे लोगों की तलाश में जुटे हैं।

भूकंप के बाद हजारों घरों में बिजली और पानी की सप्लाई ठप है। गुरुवार सुबह तक करीब 22,670 घरों और संस्थानों में बिजली नहीं थी, जबकि 84 हजार से ज्यादा घरों में पानी की आपूर्ति बाधित रही। राहत शिविरों में भीषण गर्मी के बीच लोगों को ठहराया गया है और सरकार ने वहां एयर कंडीशनर भेजे हैं। यात्सुशिरो शहर की निप्पॉन पेपर इंडस्ट्रीज फैक्ट्री में चिमनी गिरने से 5 लोगों की मौत हुई है, जबकि 4 लोग अब भी लापता हैं।

बीएमडब्लू में 8 हजार नौकरियां जाएंगी, 2027 तक 5फीसदी वर्कफोर्स घटाने की तैयारी

मैक्सिकों। जर्मनी की लग्जरी कार निर्माता बीएमडब्लू 2027 के अंत तक दुनियाभर में करीब 8,000 कर्मचारियों की छंटनी की तैयारी कर रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, कंपनी बढ़ती उत्पादन लागत और चीन में बिक्री में आई गिरावट के कारण अपनी वैश्विक वर्कफोर्स का लगभग 5फीसदी घटाएगी। सबसे अधिक असर जर्मनी के कर्मचारियों पर पड़ने की संभावना है। रिपोर्ट्स के अनुसार, कंपनी अक्टूबर से स्वैच्छिक कर्मचारी कटौती कार्यक्रम शुरू कर सकती है, जो 2027 तक चलेगा। इसके तहत रिसर्च, डेवलपमेंट, प्लानिंग और अन्य कॉर्पोरेट विभागों के कर्मचारियों को वॉलंटरी बायआउट ऑफर किया जाएगा। हालांकि, फैक्ट्री कर्मचारियों को इस योजना में शामिल नहीं किया जाएगा। 2025 के अंत तक बीएमडब्लू के जर्मनी में 87,436 कर्मचारी थे, जो उसकी कुल वैश्विक वर्कफोर्स के आधे से अधिक हैं। कंपनी पहले ही 2024 की तुलना में अपने कर्मचारियों की संख्या में 2.3फीसदी की कमी कर चुकी है। जर्मनी की ऑटो इंडस्ट्री व्यापक दबाव का सामना कर रही है। पोर्श ने 2035 तक अतिरिक्त 5,000 नौकरियां खत्म करने की घोषणा की है, जबकि वोक्सवैगन भी बड़े पैमाने पर कर्मचारी संख्या घटाने पर विचार कर रही है।

आतंकी सामग्री हटाने में लापरवाही का आरोप- टेलीग्राम के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू की

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के इंटरनेट सुरक्षा नियामक ने पहले से चिन्हित आतंकी सामग्री वाली थीं। आरोप है कि टेलीग्राम

मैसेजिंग प्लेटफॉर्म टेलीग्राम के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू की है। आरोप है कि कंपनी ने आतंकवादी हमलों और चरमपंथी हिंसा से जुड़े वीडियो व अन्य सामग्री को शिकायत मिलने के बाद भी समय पर नहीं हटाया। नियमों के उल्लंघन पर कंपनी पर 5.46 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर तक का सिविल जुर्माना लगाया जा सकता है। अदालती दस्तावेज के अनुसार, जुलाई से अक्टूबर 2025 के बीच ऑस्ट्रेलियाई उपयोगकर्ताओं ने 12 पोस्ट की शिकायत की थी, जिनमें आतंकवाद समर्थक सामग्री थी। इनमें से तीन पोस्ट ने 10 पोस्ट नहीं हटाए और संबंधित खातों को भी निलंबित या ब्लॉक नहीं किया। टेलीग्राम ने आरोपों को खारिज करते हुए कहा है कि वह अदालत में अपना पक्ष रखेगा।

टेलीग्राम के एक अरब से अधिक मासिक सक्रिय उपयोगकर्ता हैं। इसके संस्थापक पावेल दुरोव 2017 से दुबई में रहकर कंपनी का संचालन कर रहे हैं। हाल के दिनों में रूस ने भी दुरोव पर आरोप लगाया है कि ऐप का इस्तेमाल यूक्रेनी जासूस रूस के भीतर आतंकी गतिविधियों के समन्वय के लिए कर रहे हैं।

सलमान रुश्दी पर हमले का आरोपी आतंकवाद के आरोपों में भी दोषी करार

न्यूयॉर्क। प्रसिद्ध लेखक सलमान रुश्दी पर 2022 में चाकू से हमला करने वाले हादी मातर को अमेरिका की संघीय अदालत ने आतंकवाद से जुड़े सभी आरोपों में दोषी ठहरा दिया है। पहले से हत्या के प्रयास के मामले में 25 साल की सजा काट रहे मातर को अब संघीय मामले में उम्रकैद तक की सजा हो सकती है। इस मामले में सजा 3 नवंबर को सुनाई जाएगी। न्यूयॉर्क के बफेलो स्थित अमेरिकी जिला अदालत की जूरी ने करीब दो घंटे विचार-विमर्श के बाद मातर को लेबनान के ईरान समर्थित संगठन हिजबुल्लाह को सहयोग देने के प्रयास, अंतरराष्ट्रीय सीमा से जुड़े आतंकवाद और आतंकियों को सहायता उपलब्ध कराने सहित सभी आरोपों में दोषी पाया। अभियोजन पक्ष के अनुसार, मातर ने सलमान रुश्दी के विवादित उपन्यास 'द सैटेनिक वर्सेज' के खिलाफ जारी फतवे का एक वर्ष से अधिक समय तक अध्ययन किया और उसी से प्रेरित होकर 12 अगस्त 2022 को न्यूयॉर्क के चॉटाक्वा इंस्टीट्यूशन में मंच पर उन पर चाकू से हमला किया। 1989 में ईरान के तत्कालीन सर्वोच्च नेता अयातुल्ला रुहोल्लाह खुमैनी ने 'द सैटेनिक वर्सेज' को ईशनिंदा बताते हुए रुश्दी की हत्या का फतवा जारी किया था। बाद में ईरानी सरकार ने इससे दूरी बना ली, लेकिन यह फतवा समय-समय पर विभिन्न कट्टरपंथी संगठनों द्वारा समर्थन पाता रहा।

प्रयागराज में सॉल्वर गैंग का भंडाफोड़, आईटीआई नैनी के प्रिंसिपल समेत 11 गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। उत्तर प्रदेश स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने प्रयागराज के राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई), नैनी में आयोजित अखिल भारतीय व्यावसायिक परीक्षा की कंप्यूटर आधारित परीक्षा (सीबीटी) में बड़े फर्जीवाड़े का खुलासा किया है। एसटीएफ ने इस मामले में संस्थान के प्रिंसिपल, परीक्षा प्रभारी, प्रशिक्षकों और सॉल्वर सहित कुल 11 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जांच में सामने आया है कि असली परीक्षार्थियों की जगह सॉल्वर बैठाकर परीक्षा दिलाई जा रही थी। आरोपियों द्वारा अभ्यर्थियों से मोटी रकम लेकर उन्हें परीक्षा में पास कराने का खेल संचालित किया जा रहा था। एसटीएफ की कार्रवाई के दौरान रु5.10 लाख नकद, कंप्यूटर उपकरण, मोबाइल फोन, परीक्षा से संबंधित दस्तावेज और अन्य महत्वपूर्ण सामग्री बरामद की गई। प्रारंभिक जांच में यह भी पता चला है कि संगठित तरीके से सॉल्वर गैंग परीक्षा प्रक्रिया में हस्तक्षेप कर अभ्यर्थियों को अवैध लाभ पहुंचा रहा था। एसटीएफ ने मामले में तत्काल कार्रवाई करते हुए सभी आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। इस संबंध में थाना नैनी, कमिश्नरेट प्रयागराज में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और पूरे नेटवर्क की जांच की जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि मामले में शामिल अन्य लोगों की भूमिका की भी जांच की जा रही है तथा साक्ष्यों के आधार पर आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी।

जिलाधिकारी ने निर्माणाधीन सभागार एवं पुस्तकालय का किया स्थलीय निरीक्षण, गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध ढंग से कार्य पूर्ण कराने के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने आज अवध केसरी राना बेनी माधव बख्श सिंह की स्मृति में निर्माणाधीन सभागार एवं पुस्तकालय का स्थलीय निरीक्षण कर निर्माण कार्यों की प्रगति का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान परियोजना के फेज-1 का शत-प्रतिशत कार्य पूर्ण पाया गया। सभागार में लाइट, साउंड सिस्टम सहित अन्य आवश्यक कार्य भी पूर्ण हो चुके हैं। कार्यदायी संस्था उत्तर प्रदेश प्रोजेक्ट कॉरपोरेशन लिमिटेड के प्रतिनिधियों ने जिलाधिकारी को अवगत कराया कि परियोजना के फेज-2 में स्ट्रक्चर का कार्य पूर्ण कर लिया गया है तथा फिनिशिंग का कार्य प्रगति पर है।जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्माण कार्यों को गुणवत्तापूर्ण, निर्धारित मानकों के अनुरूप एवं समयबद्ध ढंग से पूर्ण कराया जाए। उन्होंने निर्माणाधीन पार्किंग के कार्य को भी शीघ्र पूर्ण कराने के निर्देश दिए, ताकि परियोजना का समुचित एवं प्रभावी उपयोग सुनिश्चित हो सके। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी सुधीर गिरि, उत्तर प्रदेश प्रोजेक्ट कॉरपोरेशन लिमिटेड के अवर अभियंता विनय कुमार, सहायक प्रोजेक्ट अभियंता संदीप कुमार सहित संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

मुख्य विकास अधिकारी ने जिला उद्योग बन्धु समिति की बैठक कर उद्यमियों की समस्याओं को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित करने के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। मुख्य विकास अधिकारी हर्षिका सिंह की अध्यक्षता में गुरूवार को संगम सभागार में जिला उद्योग बन्धु समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ने सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को उद्यमियों की समस्याओं को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित करने के लिए कहा है। बैठक में विद्युत विभाग, क्षेत्रीय प्रबंधक यूपीसीडा, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, एक जनपद एक उत्पाद, मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान, निवेश मित्र पोर्टल सहित अन्य सम्बंधित विषयों की बिंदुवार समीक्षा की गयी। उन्होंने निवेश मित्र पोर्टल की समीक्षा करते हुए सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को निवेश मित्र पोर्टल पर लम्बित आवेदन पत्रों को निर्धारित समय सीमा में अनिवार्य रूप से निस्तारित करने के लिए कहा है। बैठक में पांच बिन्दुओं के प्रकरण पर क्षेत्रीय प्रबन्धक, यूपीसीडा द्वारा समिति को अवगत कराया गया कि सड़क निर्माण का कार्य प्रगति पर है। उ0प्र0 स्टेट यार्न लि0 मेजा की भूमि के सम्बन्ध में क्षेत्रीय प्रबन्धक, यूपीसीडा को निर्देश दिये गये कि उप जिलाधिकारी बारा के कार्यालय से समन्वय कर सम्बन्धित भूमि पर कब्जा प्राप्त करने की कार्यवाही की जाय। डा0 जी0एस0 दरबारी प्रोपाइटर मे0 दरबारी इण्डस्ट्रीज के प्रकरण पर मुख्य विकास अधिकारी ने अधिशासी अभियन्ता बम्हरौली को निर्देश दिये कि अनावश्यक रूप से हो रही विद्युत ट्रीपिंग की समस्या को समाप्त किया जाय। उन्होंने मिनी औद्योगिक आस्थान सोरांव मे सड़क निर्माण एवं बाउण्ड्रीवाल निर्माण के सम्बन्ध में दिनांक 31.07.2026 को भौतिक निरीक्षण करने के लिए कहा है। इस अवसर पर उपायुक्त उद्योग श्री शरद टण्डन, आर0एम0 यूपीसीडा (आनलाइन) अग्निशमन अधिकारी, जिला अग्रणी बैंक प्रबन्धक, डा0 अभिषेक सिंह, श्री विजय उ0प्र0 प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, उप निबन्धक करछना श्री नीरज पाण्डेय (आनलाइन) सहायक आयुक्त उद्योग श्रीमती सारिका सिंह एवं श्री पंकज कुमार मौर्या, विद्युत नोडल एवं विद्युत अधिशासी अभियन्ता, सूचना अधिकारी श्री युवराज सिंह, श्री राकेश कुमार जी0आई0टी0आई0 नैनी, श्री खुर्शीद आलम पर्यटन विभाग एवं औद्योगिक संगठन के पदाधिकारी श्री विनय टण्डन, श्री नटवर लाल, श्री मुरारी लाल अग्रवाल, श्री संतोष त्रिपाठी, यूनाईटेड ग्रुप डा0 जगदीश गुलाटी एवं श्री वी0एन0 सिंह, श्री मनीष केसरवानी, श्रीमती विभा मिश्रा, श्री अनुराग मिश्रा, श्री अजय सिंह गौड़ उद्यमी एवं अन्य विभागों के अधिकारी तथा उद्यमीगण उपस्थित रहे।

डीएम ने वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को लेकर विकास एवं आर्थिक गतिविधियों की समीक्षा

सभी विभाग निर्धारित लक्ष्यों की समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण पूर्ति सुनिश्चित करें- जिलाधिकारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में उत्तर प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य के अंतर्गत जनपद में संचालित विभिन्न विकास एवं आर्थिक गतिविधियों की त्रैमासिक समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जनपद की आर्थिक प्रगति से जुड़े विभिन्न विभागीय कार्यों, योजनाओं एवं परियोजनाओं की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में कृषि एवं उद्यानिकी फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता, दुग्ध उत्पादन एवं दुग्ध प्रसंस्करण, उद्योगों के लिए भूमि आवंटन एवं स्वीकृतियां, औद्योगिक इकाइयों की स्थापना एवं पंजीकरण सहित औद्योगिक विकास से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की गई। इसके साथ ही राजमार्ग, विद्युत ग्रिड, लॉजिस्टिक्स हब, विशेष निवेश जोन, औद्योगिक क्षेत्र एवं अवस्थापना सुविधाओं के निर्माण कार्यों की प्रगति की भी समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने औद्योगिक विद्युत उपभोग, सौर ऊर्जा, सॉफ्टवेयर निर्यात, एसटीपीआई में आईटी इकाइयों के पंजीकरण, नए होटल एवं रेस्टोरेंट की स्थापना, वाणिज्यिक वाहनों के पंजीकरण, पीपीपी मोड पर निर्माणाधीन बस अड्डे, कौशल विकास एवं स्थानीय रोजगार सृजन से संबंधित कार्यों की स्थिति की जानकारी ली। इसके अलावा पर्यटन विकास एवं पर्यटक सुविधाओं, पेट्रोल-डीजल एवं सीएनजी की बिक्री, जिला घरेलू उत्पाद के प्रमुख संकेतकों, जिला अर्थव्यवस्था रिपोर्ट तथा नियोजन विभाग द्वारा वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के संबंध में सौंपे गए अन्य कार्यों की भी समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि शासन की प्राथमिकताओं एवं निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप सभी योजनाओं और परियोजनाओं का समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण एवं प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि विभिन्न विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए निर्धारित लक्ष्यों की समय से पूर्ति करें तथा जनपद की आर्थिक गतिविधियों, निवेश, रोजगार सृजन एवं औद्योगिक विकास को गति देने में प्रभावी भूमिका निभाएं।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि समीक्षा में सामने आए बिंदुओं पर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करते हुए प्रगति में अपेक्षित सुधार लाया जाए तथा शासन स्तर से निर्धारित लक्ष्यों की उपलब्धि के लिए निरंतर निगरानी की जाए। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता, उप कृषि निदेशक हिमांशु पाण्डेय, जिला अर्थ एवं सांख्यिकी अधिकारी सुधीर गिरी, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. कुलदीप द्विवेदी, जिला उद्यान अधिकारी जयराम वर्मा सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

छपरा-सिवान-थावे-मशरख- रेलखंड पर 40बिना,टिकट यात्रियों से वसूला रु20,760 का जुर्माना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वाराणसी। बिना टिकट और अनियमित यात्रा करने वालों के खिलाफ वाराणसी मंडल का अभियान लगातार तेज होता जा रहा है। गुरुवार को छपरा-सिवान-थावे-मशरख रेलखंड पर चलाए गए विशेष सघन टिकट जांच अभियान में रेलवे ने बिना टिकट यात्रा कर रहे 40 यात्रियों को पकड़कर उनसे रु20,760 का जुर्माना एवं किराया वसूल किया। अभियान के दौरान स्टेशनों पर टिकट लेने के लिए यात्रियों की लंबी कतारें भी देखने को मिलीं, जिससे वैध टिकट लेकर यात्रा करने के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ती नजर आई। मंडल रेल प्रबंधक वाराणसी आशीष जैन के निर्देशन तथा वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक प्रशस्ति श्रीवास्तव के नेतृत्व में बिना टिकट एवं अनियमित यात्रा पर प्रभावी अंकुश लगाने के उद्देश्य से यह विशेष अभियान चलाया गया। 30 जुलाई को छपरा, सिवान, थावे, मशरख एवं छपरा कचहरी स्टेशनों को आधार बनाकर छपरा कचहरी-थावे-मशरख रेलखंड पर किलाबंदी करते हुए ट्रेनों की गहन जांच की गई। अभियान के दौरान गाड़ी संख्या 75103 छपरा-थावे डेमू, 55109 थावे-मशरख-छपरा कचहरी सवारी गाड़ी सहित विभिन्न ट्रेनों में टिकट जांच की गई। जांच टीम ने बिना टिकट तथा अनियमित टिकट पर यात्रा कर रहे यात्रियों को मौके पर ही पकड़कर रेलवे अधिनियम के तहत कार्रवाई करते हुए निर्धारित जुर्माना और किराया वसूला। विशेष जांच अभियान का नेतृत्व मुख्य वाणिज्य निरीक्षक थावे विशाल कुमार सिंह ने किया। उनके साथ मुख्य टिकट निरीक्षक सईद अख्तर, टिकट जांच कर्मचारी राजेश सिंह, प्रकाश कुमार, राजीव कुमार, राजेश सिंह, ममता कुमारी और प्रतिमा कुमारी सहित कुल छह टिकट जांच कर्मियों ने रेलवे सुरक्षा बल के दो जवानों के सहयोग से अभियान को सफल बनाया। रेल अधिकारियों के अनुसार अभियान का उद्देश्य केवल राजस्व की सुरक्षा करना ही नहीं, बल्कि यात्रियों में वैध टिकट लेकर यात्रा करने की आदत विकसित करना भी है। यही वजह रही कि जांच के दौरान संबंधित स्टेशनों के टिकट काउंटरों पर यात्रियों की लंबी कतारें लगी रहीं और अधिकांश यात्रियों ने टिकट लेकर ही यात्रा करना उचित समझा।वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक प्रशस्ति श्रीवास्तव ने यात्रियों से अपील की कि वे सदैव वैध टिकट लेकर ही रेल यात्रा करें, रेलवे के नियमों का पालन करें तथा ट्रेनों और रेलवे परिसरों में स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग दें। उन्होंने स्पष्ट किया कि बिना टिकट एवं अनियमित यात्रा के विरुद्ध ऐसे सघन जांच अभियान आगे भी लगातार जारी रहेंगे। मुख्य प्रचार निरीक्षक हिमांशु राव ने बताया कि रेलवे का यह अभियान यात्रियों में अनुशासित एवं सुरक्षित यात्रा की भावना को मजबूत करने के साथ-साथ रेलवे राजस्व की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में प्रभावी साबित हो रहा है।

पत्रकार आरव भरद्वाज के बाबा नही रहे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। प्रयागराज के ए एन आई के पत्रकार आरव भारद्वाज के बाबा श्री राधे कृष्णा पाण्डेय ने आज अंतिम सांस ली। उनकी अंत्येष्टि आज 9:00 बजे रसूलाबाद घाट पर होगी। श्री पांडे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं उनके एक मात्र पुत्र विमल कुमार पांडे हैं

जो वॉलीबॉल के राष्ट्रीय खिलाड़ी भी हैं। आरव के बाबा श्री पांडे की अंतिमयात्रा कल सुबह उनके मीरापुर आवास से रसूलाबाद घाट प्रस्थान करेगी। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया क्लब के सदस्यों ने क्लब के सह कोषाध्यक्ष आरव के बाबा के निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की है।

मत्स्य विभाग की विभिन्न योजनाओं के लिए ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि अब 5 अगस्त तक बढ़ी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मत्स्य पालक विकास अभिकरण, रायबरेली इरफानुल्लाह खान ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2026-27 में मत्स्य विभाग द्वारा संचालित राज्य सेक्टर की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत ऑनलाइन आवेदन करने के लिए विभागीय पोर्टल http://fisheries.up.gov.in 16 जुलाई से 31 जुलाई 2026 तक खोला गया था। अधिक से अधिक आवेदन प्राप्त करने के उद्देश्य से ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 31 जुलाई से बढ़ाकर 5 अगस्त 2026 कर दी गई है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री मत्स्य संपदा योजना, सघन मत्स्य पालन हेतु एयरेशन सिस्टम स्थापना योजना, उत्तर प्रदेश मत्स्य पालक कल्याण कोष के अंतर्गत मोपेड विद आइस बॉक्स परियोजना, माता सुकेता महिला मत्स्य पालक सशक्तिकरण परियोजना के अंतर्गत श्रेणी-1, 2 एवं 3 के जलाशय वाले जनपदों में केज स्थापना। अंतर्देशीय खारे जल क्षेत्रों में मत्स्यिकी विकास हेतु नए तालाब निर्माण एवं प्रथम वर्ष निवेश योजना एवं उत्तर प्रदेश में मोती संवर्धन योजना तथा विशिष्ट प्रजाति की मत्स्य हैचरी स्थापना योजना के लिए इच्छुक लाभार्थी ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने बताया कि प्रत्येक योजना के लिए अलग-अलग ऑनलाइन आवेदन करना अनिवार्य होगा। योजनाओं का विस्तृत विवरण, इकाई लागत, आवेदन प्रक्रिया तथा आवेदन के साथ संलग्न किए जाने वाले आवश्यक अभिलेख विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यदि भविष्य में योजनाओं के प्रावधानों में कोई संशोधन किया जाता है तो संशोधित प्रावधान ही प्रभावी होंगे। पूर्व वर्षों में जिन आवेदकों के आवेदन निरस्त हो गए थे अथवा प्रतीक्षारत हैं, वे भी पुनः आवेदन कर सकते हैं। योजनाओं से संबंधित अधिक जानकारी के लिए आवेदक मत्स्य विभाग के जनपदीय, मंडलीय एवं मत्स्य निदेशालय के कार्यालयों में किसी भी कार्य दिवस पर संपर्क कर सकते हैं।

यूपीएसआईए ने वरुण बेवरेजेज़ (पेप्सिको) की जीएम प्रेरणा कपूर को सामाजिक कार्यों के लिए किया सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज नैनी । उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक संघ (ळइएईं) के प्रतिनिधिमंडल ने वरुण बेवरेजेज़ (पेप्सिको) उद्योग का दौरा कर कंपनी की जनरल मैनेजर प्रेरणा कपूर को उनके द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्यों एवं समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया।इस अवसर पर यूपीएसआईए के प्रतिनिधियों और कंपनी प्रबंधन के बीच भविष्य में समाज हित में किए जाने वाले विभिन्न सामाजिक एवं जनकल्याणकारी कार्यों को लेकर विस्तृत चर्चा भी हुई। प्रतिनिधिमंडल ने उद्योगों और सामाजिक संस्थाओं के बीच समन्वय बढ़ाकर शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण एवं अन्य जनहित के कार्यों में संयुक्त रूप से सहयोग करने पर बल दिया। यूपीएसआईए की ओर से अध्यक्ष अरविंद राय, के. खान, मनीष शुक्ला, नीरज श्रीवास्तव एवं डॉ. पुनीत अरोड़ा उपस्थित रहे। इस दौरान यूपीएसआईए अध्यक्ष अरविंद राय एवं उनकी टीम ने प्रेरणा कपूर को प्रशस्ति-पत्र (णीर्गीमू र्दे ज्जीर्मूदह) प्रदान कर सम्मानित किया, जबकि मीडिया प्रभारी डॉ. पुनीत अरोड़ा ने उन्हें स्मृति-चिह्न (मोमेंटो) भेंट किया। कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ तथा सभी उपस्थित सदस्यों ने समाज सेवा के क्षेत्र में भविष्य में भी मिलकर कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया।

महापद्मनंद वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन की महाराष्ट्र इकाई के कोषाध्यक्ष बने अनिल कुमार शर्मा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मुंबई। सामाजिक संगठन

महापद्मानंद वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन (एम डब्ल्यू ओ) की केंद्रीय कमेटी ने संगठन के विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए अनिल कुमार शर्मा को संगठन की महाराष्ट्र इकाई का कोषाध्यक्ष मनोनीत किया है। यह नियुक्ति महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष घनश्याम शर्मा की संस्तुति पर की गई है। अनिल कुमार शर्मा मूल रूप से ग्राम जखनी खुर्द, तहसील लम्भुआ, जनपद सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश) के निवासी हैं तथा वर्तमान में प्रेम कोर्ट बिल्डिंग, ग्राउंड फ्लोर, चर्चगेट, मुंबई में निवास कर रहे हैं। उनकी सामाजिक सक्रियता, संगठन के प्रति निष्ठा, सेवा- भाव, नेतृत्व क्षमता एवं समाजहित के प्रति समर्पण को देखते हुए उन्हें यह महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष घनश्याम शर्मा ने विश्वास व्यक्त किया कि अनिल कुमार शर्मा संगठन के संविधान, उद्देश्यों एवं अनुशासन का पालन करते हुए महाराष्ट्र में संगठन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने, सामाजिक एकता को मजबूत करने तथा जनसेवा के कार्यों को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

अपने मनोनयन पर अनिल कुमार शर्मा ने केंद्रीय नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे संगठन द्वारा व्यक्त विश्वास पर पूर्णतः खरा उतरने का प्रयास करेंगे तथा समाज एवं संगठन के हित में पूरी निष्ठा, ईमानदारी और समर्पण के साथ कार्य करेंगे।

महापद्मानंद वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन ने आशा व्यक्त की है कि उनके नेतृत्व एवं सक्रिय सहभागिता से महाराष्ट्र में संगठन और अधिक सशक्त एवं प्रभावी बनेगा तथा समाजहित के विभिन्न अभियान नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ेंगे।

उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग, प्रयागराज

प्रशिक्षित स्नातक भर्ती-2022: अनुपस्थित अभ्यर्थियों को 10 अगस्त को अंतिम अवसर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज/लखनऊ। प्रशिक्षित स्नातक (विज्ञापन संख्या-01/2022) के विज्ञापित 3539 पदों के सापेक्ष 15 विषयों की लिखित परीक्षा में औपबंधिक रूप से सफल अभ्यर्थियों का परिणाम अभिलेख सत्यापन के उपरांत उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड नियमावली, 1998 के नियम 12(8) के अनुसार 28 जुलाई 2026 को घोषित किया गया था। उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग के अध्यक्ष डॉ. प्रशांत कुमार ने बताया कि आयोग द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार जो अभ्यर्थी अभिलेख सत्यापन हेतु अनुपस्थित थे , मेरिट में आने के कारण उन्हें भी अंतिम परिणाम में औपबंधिक रूप से शामिल किया गया है।

ऐसे सभी अनुपस्थित अभ्यर्थियों को आयोग द्वारा अभिलेख सत्यापन के लिए एक अंतिम अवसर 10 अगस्त 2026 को प्रदान किया जा रहा है। अभिलेख सत्यापन हेतु विस्तृत विज्ञप्ति और सूची आयोग की आधिकारिक वेबसाइट www.upessc.up.gov.in पर प्रदर्शित है।

योगी सरकार का बड़ा कदम-3 से 10 अगस्त तक चलेगा 'दिव्यांगजन रोजगार अभियान 3.0'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। दिव्यांगजनों को आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने

के लिए योगी सरकार द्वारा प्रदेश भर में 'दिव्यांगजन रोजगार अभियान 3.0' का आयोजन 3 से 10 अगस्त 2026 तक किया जा रहा है। प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में दिव्यांगजनों को सम्मानजनक आजीविका से जोड़ना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन की इस विशेष पहल का उद्देश्य कौशल प्रशिक्षण प्राप्त दिव्यांगजनों सहित अन्य योग्य इच्छुक दिव्यांग युवाओं को उनकी योग्यता और कौशल के अनुसार रोजगार और स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। अभियान के दौरान प्रदेश के सभी राजकीय आईटीआई में विशेष रोजगार गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। दिव्यांग अभ्यर्थियों को रोजगार के साथ-साथ विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं की जानकारी भी दी जाएगी। जिला उद्योग एवं निर्यात प्रोत्साहन केंद्र औद्योगिक इकाइयों और व्यावसायिक संस्थानों से समन्वय कर रिक्तियों की जानकारी जुटाएगा, वहीं एमएसएमई विभाग स्वरोजगार योजनाओं और लीड बैंक के माध्यम से ऋण व वित्तीय सहायता में सहयोग करेगा। जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी और जिला रोजगार सहायता अधिकारी रोजगार संगम पोर्टल पर पंजीकृत अभ्यर्थियों को रिक्तियों से जोड़ेंगे। अभियान की खास बात यह है कि पिछले दो चरणों में लाभान्वित दिव्यांगजनों का भौतिक सत्यापन भी किया जाएगा, ताकि उनकी वर्तमान स्थिति का आकलन हो सके।योगी सरकार की मंशा है कि कोई भी दिव्यांगजन रोजगार से वंचित न रहे। इसके लिए व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। प्रत्येक जनपद में मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समिति बनाई गई है, जो अभियान की निगरानी और समन्वय करेगी। 10 अगस्त तक सभी जनपदों से लाभान्वितों का विवरण शासन को भेजा जाएगा और सर्वाधिक रोजगार-स्वरोजगार उपलब्ध कराने वाले शीर्ष पांच जनपदों के जिलाधिकारियों और उनकी टीम को शासन स्तर पर प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। इसकी तैयारियों को लेकर 30 जुलाई को मिशन निदेशक पुलकित खरे ने सभी सीडीओ और संबंधित अधिकारियों के साथ ऑनलाइन बैठक कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

उत्तर मध्य रेलवे ने मिर्जापुर-पं. दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन रेलखंड (64 आरकेएम) पर 'कवच 4.0' का सफल कमीशनिंग कर रचा नया कीर्तिमान

'कवच 4.0' विस्तार में उत्तर मध्य रेलवे ने हासिल की नई ऐतिहासिक सफलता, प्रयागराज मंडल के 636 रूट किमी नेटवर्क हुआ संचालित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे ने रेल संरक्षा के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए मिर्जापुर (समेत)-पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन (अपवर्जित) खंड के 64 रूट किलोमीटर पर कवच वर्ज़न 4.0 (ट्रेन कोलिजन अवॉइडेंस सिस्टम) का सफल कमीशनिंग किया है। इस उपलब्धि के साथ उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज मंडल मे कमीशन किए गए नेटवर्क की कुल लंबाई बढ़कर 636 रूट किलोमीटर हो गई है। यह उपलब्धि भारतीय रेलवे के सुरक्षित, आधुनिक एवं तकनीक-आधारित रेल संचालन के लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। 'कवच' भारतीय रेलवे द्वारा विकसित स्वदेशी स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली (Automatic Train Protection System) है, जिसे ट्रेनों के सुरक्षित संचालन के लिए विकसित किया गया है। यह प्रणाली लाल सिग्नल पार करने (एसपीएडी) की घटनाओं को रोकने, निर्धारित गति सीमा का पालन सुनिश्चित करने, संभावित टक्करों से सुरक्षा प्रदान करने तथा लोको पायलट को वास्तविक समय में आवश्यक परिचालन संबंधी जानकारी उपलब्ध कराने का कार्य करती है। आधुनिक रेडियो संचार, माइक्रोप्रोसेसर एवं सेंसर आधारित यह प्रणाली इंजन, स्टेशन, सिग्नलिंग प्रणाली तथा ट्रैकसाइड उपकरणों के बीच निरंतर डेटा का आदान-प्रदान कर रेल संचालन को अधिक सुरक्षित और विश्वसनीय बनाती है।

'कवच' प्रणाली में ट्रैक के बीच निर्धारित दूरी पर लगाए गए रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन टैग ट्रेन की सटीक स्थिति, दिशा और गति की जानकारी उपलब्ध कराते हैं। इंजन में स्थापित एंटेना इन टैगों को पढ़कर ट्रेन की वास्तविक लोकेशन का निर्धारण करते हैं। साथ ही, अल्ट्रा हाई फ्रिक्वेंसी रेडियो संचार प्रणाली के माध्यम से इंजन, स्टेशन एवं ट्रैकसाइड उपकरणों के बीच लगातार सूचनाओं का आदान-प्रदान होता रहता है। यदि चालक लाल सिग्नल पार करने का प्रयास करता है अथवा निर्धारित गति सीमा से अधिक गति से ट्रेन चलाता है, तो 'कवच' पहले दृश्य एवं श्रव्य चेतावनी देता है और आवश्यकता पड़ने पर स्वतः ब्रेक लगाकर ट्रेन की गति नियंत्रित करता है। यह प्रणाली एक ही ट्रैक पर चल रही दो ट्रेनों के बीच सुरक्षित दूरी बनाए रखने में भी सक्षम है तथा घने कोहरे या कम दृश्यता की स्थिति में भी चालक को सिग्नल एवं गति प्रतिबंधों की सटीक जानकारी उपलब्ध कराकर सुरक्षित संचालन सुनिश्चित करती है। इससे पूर्व उत्तर मध्य रेलवे में चिपयाना-टूंडला (175 रूट किमी), टूंडला-पनकी धाम (207 रूट किमी) तथा कानपुर-प्रयागराज (छोड़कर) (190 रूट किमी) पर 'कवच 4.0' प्रणाली का सफल कमीशनिंग किया जा चुका था। इन चारों खंडों में कुल 572 रूट किलोमीटर पर 'कवच' संचालित है। अब मिर्जापुर (समेत)-पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन खंड के 64 रूट किलोमीटर के सफल कमीशनिंग के साथ चिपयाना (छोड़कर) से पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन (प्रयागराज-मिर्जापुर को छोड़ कर) तक लगभग 636 रूट किलोमीटर का निरंतर 'कवच' संरक्षित रेलखंड तैयार हो गया है। उत्तर मध्य रेलवे में शेष स्वीकृत रेलखंडों पर भी कवच का कार्य तीव्र गति से प्रगति पर है तथा चरणबद्ध तरीके से कमीशनिंग किया जा रहा है।

इस परियोजना को महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे श्री नरेश पाल सिंह के मार्ग निर्देशन तथा प्रधान मुख्य सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनियर के नेतृत्व तथा सिग्नल एवं दूरसंचार विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों, प्रयागराज मंडल, परियोजना, योजना, डिजाइन, ड्रॉइंग एवं फील्ड टीमों के समर्पित प्रयासों से सफलतापूर्वक पूरा किया गया। इस परियोजना के दौरान अनेक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धियाँ भी हासिल की गईं। भारतीय रेलवे में पहली बार WAG-9 मालगाड़ी इंजन पर KERNEX निर्मित कवच का सफल कमीशनिंग किया गया। इसके साथ ही 09 इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग स्टेशनों पर कवच का सफल एकीकरण किया गया, जिनमें 07 Hitachi Electronic Interlocking तथा 02 Kyosan Electronic Interlocking स्टेशनों को प्रोटोकॉल कन्वर्टर के माध्यम से जोड़ा गया। इसके अतिरिक्त RIU (Remote Interface Unit) के माध्यम से ऑटो सेक्शन सिग्नलिंग सूचना का भी सफल एकीकरण किया गया।परियोजना के अंतर्गत आधुनिक तकनीकों का व्यापक उपयोग किया गया। संपूर्ण रेलखंड का ड्रोन, RSSI Skeb RF सर्वे किया गया तथा ट्रैक पर 1,824 RFID टैग स्थापित किए गए। बेहतर संचार व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए 03 नए 40 मीटर ऊंचे संचार टावर एवं संबंधित KAVACH अवसंरचना का निर्माण किया गया। इसके साथ ही 2 × 24-कोर बैकबोन ऑप्टिकल फाइबर केबल (OFC) बिछाई गई तथा KAVACH भवनों एवं रिले रूम का निर्माण एवं विस्तार भी किया गया। प्रणाली की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए उत्तर मध्य रेलवे, OEM प्रतिनिधियों तथा ISA Italcertifie द्वारा संयुक्त रूप से व्यापक परीक्षण किए गए। इन परीक्षणों में SPAD रोकथाम, लूप लाइन गति नियंत्रण, SOS एवं विभिन्न फेल्योर मोड, RF एवं संचार विफलता परिदृश्य, STCAS कनेक्टिविटी, RFID रीडर परीक्षण तथा मोड ट्रांजिशन एवं एक्नॉलेजमेंट का सफल सत्यापन किया गया। इसके अतिरिक्त ब्रह्मपुत्र एक्सप्रेस (15657/15658) तथा पुरुषोत्तम एक्सप्रेस (12801/12802) के माध्यम से ब्रेक आइसोलेटेड फील्ड ट्रायल भी सफलतापूर्वक संपन्न किए गए। यह उपलब्धि दिल्ली-हावड़ा उच्च घनत्व रेल कॉरिडोर पर रेल सुरक्षा को और अधिक सुदृढ़ करने, परिचालन विश्वसनीयता बढ़ाने तथा उच्च गति से ट्रेनों के सुरक्षित संचालन को सक्षम बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उत्तर मध्य रेलवे द्वारा 'कवच' के चरणबद्ध विस्तार से भारतीय रेलवे के 'मिशन रफ्तार' तथा सुरक्षित, आधुनिक और तकनीक-आधारित रेल परिचालन के लक्ष्य को नई गति मिल रही है।

प्रयागराज पहुंचते ही एयरपोर्ट पर हुआ खुशबू निषाद नंदा का भव्य स्वागत, एकलव्य की प्रतिमा पर किया माल्यार्पण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। गुरूवार को नेशनल

चैंपियनशिप में शानदार सफलता हासिल कर और वर्ल्ड चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई करने के बाद प्रयागराज पहुंचते ही एयरपोर्ट पर खुशबू निषाद नंदा का भव्य स्वागत किया गया, जहाँ समर्थकों और लोगों ने उन्हें फूल-मालाओं से लाद दिया। एयरपोर्ट से निकलने के बाद खुशबू अपने समर्थकों के काफिले के साथ आगे बढ़ीं और सिविल लाइंस स्थित एकलव्य की मूर्ति पर माल्यार्पण किया। खुशबू ने बताया कि उनका चयन नेशनल चैंपियनशिप में हुआ है और वह वर्ल्ड चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई कर चुकी हैं। उनकी यह बड़ी जर्नी अब वर्ल्ड चैंपियनशिप तक पहुँची है, जिसके लिए उन्होंने सभी से आशीर्वाद मांगा है।

खुशबू ने बताया कि वह पिछले पांच सालों से लगातार नेशनल चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीतती आ रही हैं और इस बार भी उन्होंने स्वर्ण पदक अपने नाम किया है।नेशनल लेवल पर सफलता के बाद अब वह आगामी नवंबर महीने में जॉर्जिया में होने वाली विश्व चैंपियनशिप में देश का प्रतिनिधित्व करेंगी। संघर्ष और सफलता के बारे में बात करते हुए उन्होंने युवाओं और पुरुषों-महिलाओं दोनों को सलाह दी कि अपने लक्ष्य को इतना मजबूत और स्ट्रॉन्ग बनाएं कि कोई भी चीज़ भटका न सके।उन्होंने कहा कि सबसे बड़ा हथियार हमारा 'माइंडसेट' होता है; यदि यह मजबूत है तो रास्ते खुद-ब-खुद खुल जाते हैं और कठिनाइयाँ छोटी लगने लगती हैं।प्रयागराज की रहने वाली खुशबू ने यहाँ के लोगों द्वारा दिए जाने वाले अपार प्यार और सम्मान के प्रति आभार व्यक्त किया और खुद को बहुत भाग्यशाली व ब्लेस्ड बताया।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सर्व शक्ति साधना मंडल

के तत्वावधान में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास

के साथ धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव अनंत श्री विभूषित महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी पंचमानंद जी महाराज ने प्रातःकाल निखिलेश्वर स्फटिक शिवलिंग का वैदिक मंत्रोच्चार के साथ रुद्राभिषेक किया। इसके उपरांत आश्रम में विराजमान भगवान श्रीराम दरबार, मां भुवनेश्वरी, मां सरस्वती, मां लक्ष्मी, मां काली, श्री भैरवनाथ तथा अपने आराध्य देव पवनसुत हनुमान जी, जिन्हें बनखंडी सरकार के नाम से जाना जाता है, का विधि-विधान से पूजन-अर्चन किया। दोपहर में आश्रम स्थित सत्संग भवन में आयोजित गुरु पूजन कार्यक्रम में उपस्थित शिष्यों एवं भक्तों ने परम पूज्य गुरुदेव का श्रद्धापूर्वक पूजन-अर्चन किया। इस अवसर पर गुरुदेव ने अपने प्रेरणादायी आशीर्वचन प्रदान करते हुए सभी शिष्यों के सुख, शांति, समृद्धि एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा बनखंडी सरकार से सभी भक्तों के कल्याण के लिए प्रार्थना की।गुरु पूजन का मुख्य सौभाग्य श्री राजेंद्र सिंह ठेकेदार तथा नोएडा से पधारे श्री एस. पी. मिश्रा एवं श्रीमती विनीता मिश्रा को प्राप्त हुआ। पूजन-अर्चन के उपरांत विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें सभी श्रद्धालुओं ने महाप्रसादी ग्रहण कर धर्मलाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर वीर पाल सिंह, देव मणि शुक्ल, वी. एन. त्यागी, सी. एल. तिवारी, प्रमोद दीक्षित, संजय पांडेय, राघवेन्द्र दूबे, रवि राघव, सियाराम, रमेश चंद्र दास, रमेश कुमार वर्मा, सत्येन्द्र प्रताप सिंह, संगम प्रसाद मिश्र, धर्मेंद्र सिंह, हंस मणि शुक्ल, अवनीश तिवारी, अनिल कुमार शर्मा, कृष्णा दूबे, देव नारायण तिवारी, रंजन गिरि, अरविंद परिहार, मनीष मिश्रा, सुशील पाल, राजेश कुमार गुप्ता, अभय पांडेय, सुरेश उपाध्याय, लाल बाबू शर्मा, अनूप सिंह, प्रमोद भारद्वाज, राज चावला, संदीप पांडेय, लक्ष्मण सिंह, नीरज शर्मा, राम निवास शर्मा, गौरव कुमार सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय कवि पंचायत मंच की मुख्य संयोजक व कवियत्री किरन सिंह 'किरण' को मिला बरेली में सम्मान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। गुरूवार को शुभम मेमोरियल साहित्यिक सामाजिक साहित्य चंचल 'साधक' एवं वरिष्ठ रचनाकार ऋषि कुमार शर्मा 'च्यवन' विशिष्ट अतिथि के

जन कल्याण समिति' बरेली के तत्वावधान में खुशहाली सभागार रूप में मौजूद रहे, जबकि मुख्य अतिथि की भूमिका में उपस्थित विधिवत् सम्मानित किया गया। गौरतलब है कि किरन सिंह समसामयिक विषयों पर अपना लेखन करती हैं और अपना कवि धर्म निभाते हुए समाज को अपने

बरेली में सत्यवती सिंह 'सत्या' द्वारा कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें देश के अलग-अलग शहरों और राज्यों से लगभग दो दर्जन कवि/रचनाकार उपस्थित हुए। नोएडा से पधारे भारत सरकार से सम्मानित कवि व लेखक, शब्दावली दर्पण न्यूज़ मीडिया के एडिटर इन चीफ़, पूर्व राजपत्रित अधिकारी पंडित लेखन से आईना दिखाने का काम करती हैं। इस भव्य कार्यक्रम में सभी रचनाकारों का काव्य पाठ आकर्षक एवं सराहनीय रहा। कार्यक्रम में शहर के गणमान्य लोगों की उपस्थिति कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रही थी।

अतिथियों द्वारा सत्यवती सिंह सत्या जी के इस आयोजन के जज्बे की भूरी भूरी प्रशंसा की गई।

राजेश्वरी बालिका इंटर कॉलेज में कवि बाबू चंद्रमा सिंह की 93वीं जयंती मनाई गई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वाराणसी/हरहुआ। क्षेत्र के बैजलपट्टी स्थित राजेश्वरी बालिका इंटर कॉलेज में प्रख्यात कवि बाबू चंद्रमा सिंह की 93वीं जयंती श्रद्धापूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्रबंधक कौशलेन्द्र नारायण सिंह ने कवि बाबू चंद्रमा सिंह के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। इस अवसर पर कक्षा 12 की छात्राओं संस्कृति गुप्ता एवं ऐनल सिंह ने उनकी रचनाओं का प्रभावशाली काव्य-पाठ प्रस्तुत किया। वहीं अध्यापिका मंजू सिंह ने सोहर गीत प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। अपने संबोधन में प्रबंधक कौशलेन्द्र नारायण सिंह ने कहा कि कवि बाबू चंद्रमा सिंह ने बालिका शिक्षा के उन्नयन के उद्देश्य से शहर से दूर हरहुआ क्षेत्र में इस बालिका इंटर कॉलेज

की स्थापना की थी। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन शिक्षा के प्रसार और साहित्य सृजन को समर्पित किया। उनकी कविताएँ मजदूरों, युवाओं, बेरोजगारों तथा देश के सैनिकों में उत्साह और जागरूकता का संचार करती हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य शेर बहादुर विश्वकर्मा ने स्वर्गीय बाबू चंद्रमा सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर संतोष विश्वकर्मा एवं कुलदीप सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के दौरान विज्ञान वर्ग की छात्राओं ने कवि की चर्चित रचना 'पीला बल्ब' पर आधारित एक लघु नाटक का प्रभावशाली मंचन किया, जिसकी सभी ने सराहना की। कार्यक्रम का संचालन अशोक सिंह ने किया, जबकि उपव्यवस्थापिका डॉ. सीमा सिंह ने सभी आगंतुकों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस मौके पर आशा यादव, संतोष विश्वकर्मा इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

एबीसी सेंटर हेतु भूमि चिन्हांकन में तेजी, जनोपयोगी कार्यों को प्राथमिकता देने के निर्देश,मुख्यमंत्री नगर सृजन योजना एवं 15वें वित्त आयोग के प्रस्तावों की जिलाधिकारी ने की समीक्षा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाधिकारी चर्चित गौड़ की अध्यक्षता में आज कलेक्ट्रेट सभागार में मुख्यमंत्री नगर सृजन योजना एवं वंदन योजना के सम्बन्ध में जनपद के समस्त नगरीय निकायों के अधिशासी अधिकारियों एवं मुख्य पशु चिकित्साधिकारी के साथ महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में शासन के निर्देशानुसार एबीसी (एनिमल बर्थ कंट्रोल) सेंटर की स्थापना के लिए उपयुक्त भूमि के चिन्हांकन पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया तथा आवश्यक कार्यवाही शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। बैठक में मुख्यमंत्री नगर सृजन योजना एवं 15वें वित्त आयोग के अंतर्गत नगरीय निकायों द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावों की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में वन्दन योजना के अन्तर्गत चुर्क नगर पंचायत में शीतला माता मंन्दिर पर अवस्थापना सुविधायें एवं सौन्दर्यीकरण कराने हेतु प्रस्ताव शासन को प्रेषित किये जाने हेतु जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिशासी अधिकारी को निर्देशित किये। जिलाधिकारी ने प्रस्तुत प्रस्तावों का परीक्षण करते हुए उपयुक्त एवं जनहितकारी कार्यों को स्वीकृति प्रदान की तथा जो प्रस्ताव योजना की गाइडलाइन के अनुरूप नहीं पाए गए, उनके स्थान पर नियमों के अनुरूप अन्य जनोपयोगी कार्यों के प्रस्ताव दो दिवस के भीतर उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि योजनाओं के अंतर्गत ऐसे कार्यों को प्राथमिकता दी जाए, जिनसे नगरों की उपयोगिता, स्वच्छता, आधारभूत सुविधाओं तथा सौंदर्यीकरण में प्रभावी वृद्धि हो और आमजन को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हो। उन्होंने कहा कि शासन की प्रत्येक योजना का क्रियान्वयन गुणवत्ता, पारदर्शिता एवं समयबद्धता के साथ सुनिश्चित किया जाए। बैठक में अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 श्री वागीश कुमार शुक्ला, नगर निकाय के सभी अधिशासी अधिकारी एवं संबंधित अवर अभियंता उपस्थित रहे।

करकच्छी में बीमारी से जूझ रहीं बुजुर्ग महिला का निधन, दो बेटे अंतिम संस्कार में नहीं पहुंच पाए

सोनभद्र। सोनभद्र के बभनी विकासखंड के करकच्छी गांव

निवासी 60 वर्षीय सोमारू पुत्र गनेश का गुरुवार रात लगभग आठ बजे इलाज के दौरान निधन हो गया। वह लंबे समय से उच्च रक्तचाप (बीपी) और मधुमेह (शुगर) जैसी गंभीर बीमारियों से पीड़ित थे। उनकी मौत से पूरे परिवार में शोक का माहौल है।परिजनों के अनुसार, सोमारू पिछले कई दिनों से बीमार चल रहे थे। उनका विभिन्न अस्पतालों और चिकित्सकों से इलाज कराया गया, लेकिन स्वास्थ्य में कोई विशेष सुधार नहीं हो सका। बीमारी बढ़ने के साथ इलाज का खर्च भी लगातार बढ़ता गया, जिससे परिवार आर्थिक संकट में आ गया। मृतक के पुत्र विजय कुमार ने बताया कि पिता के इलाज के लिए उन्हें कई लोगों से उधार तक लेना पड़ा। सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण परिवार समुचित इलाज नहीं करा सका, जिससे सोमारू की हालत लगातार बिगड़ती चली गई। गुरुवार को अचानक उनकी तबीयत अधिक खराब हो गई। परिजन उन्हें तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बभनी लेकर पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने उपचार के दौरान उन्हें मृत घोषित कर दिया। इसके बाद उनका पार्थिव शरीर घर लाया गया, जहां परिजनों और ग्रामीणों की मौजूदगी में अंतिम संस्कार किया गया।बताया गया कि सोमारू के तीन पुत्र हैं, जिनमें से दो रोजी-रोटी के सिलसिले में बाहर रहते हैं। पिता के निधन की सूचना मिलने के बावजूद वे अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो सके। इस घटना से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। ग्रामीणों ने शोक व्यक्त करते हुए परिवार को ढांढस बंधाया और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

नशे में धुत बाइक सवार ने तीन लोगो को मारी टक्कर,छात्रा समेत चार घायल, दो जिला अस्पताल रेफर

सोनभद्र। सोनभद्र के म्योरपुर थाना क्षेत्र में गुरुवार छुट्टी के बाद वह अपनी सहेली के साथ म्योरपुर बाजार फोटो

दोपहर एक सड़क हादसे में छात्रा समेत चार लोग घायल हो गए। भलुही गांव के पास बीजपुर-मुर्धवा मार्ग पर नशे में धुत एक बाइक सवार ने पैदल जा रही छात्रा सहित तीन लोगों को टक्कर मार दी। इस घटना में बाइक चालक समेत कुल चार लोग जख्मी हुए। गंभीर रूप से घायल छात्रा और बाइक चालक को प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है। जानकारी के अनुसार, काचन गांव निवासी 17 वर्षीय सीमा, रामचंद्र की पुत्री और भलुही कॉलेज में कक्षा 11 की छात्रा है। गुरुवार को कॉलेज की खिंचवाने जा रही थी। इसी दौरान किरबिल निवासी 18 वर्षीय अनुज, राम प्रसाद का पुत्र, तेज रफ्तार बाइक से अपने घर लौट रहा था। भलुही गांव के पास अनुज ने पहले सीमा को टक्कर मारी। टक्कर के बाद बाइक अनियंत्रित हो गई और सड़क किनारे पैदल चल रही रानी (40) और उनके 18 वर्षीय बेटे मोनू से भी जा टकराई। इस हादसे में छात्रा सीमा, रानी, मोनू और बाइक चालक अनुज घायल हो गए। घटना की सूचना मिलते ही 108 एंबुलेंस मौके पर पहुंची और सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ने उनका प्राथमिक उपचार किया। छात्रा सीमा और बाइक चालक अनुज की हालत गंभीर होने के कारण उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है, जबकि रानी और मोनू का उपचार सीएचसी में ही किया गया। चिकित्सकों ने बताया कि बाइक चालक अनुज नशे की हालत में था।

अनुज के परिजनों ने जानकारी दी कि वह किसी दूसरे व्यक्ति की बाइक बिना बताए घर से लेकर निकला था। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू कर दी है।

रेपिस्ट को 10 साल का कारावास, 9 साल पुराने मामले में फैसला, घर में घुसकर युवती से की थी दरिंदगी

सोनभद्र। सोनभद्र मे नौ साल पुराने दुष्कर्म के एक मामले में अपर सत्र न्यायाधीश एफटीसी/सीएडब्ल्यू विपिन कुमार की अदालत ने गुरुवार को फैसला सुनाया। अदालत ने दोषी संतोष पासवान को 10 वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। उस पर 50 हजार रुपये का अर्थदंड भी लगाया गया है। अर्थदंड जमा न करने पर दोषी को छह माह का अतिरिक्त कठोर कारावास भुगतना होगा। अभियोजन पक्ष के अनुसार, यह घटना फरवरी 2017 की है। रॉबर्ट्सगंज कोतवाली क्षेत्र की एक युवती ने पुलिस को तहरीर दी थी। उसने बताया था कि जब वह घर में अकेली थी, तभी बगथरी कला निवासी संतोष पासवान उसके घर में घुस आया और उसके साथ दुष्कर्म किया। पुलिस ने इस सूचना पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की और विवेचना पूरी कर आरोप पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किया। मुकदमे की सुनवाई के दौरान, पीड़िता, उसके पिता, बहन, चिकित्सक, महिला कांस्टेबल और विवेचक सहित अभियोजन पक्ष के कई गवाहों के बयान दर्ज किए गए। वहीं, आरोपी संतोष पासवान ने दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के तहत अपने बयान में सभी आरोपों से इनकार किया। उसने खुद को निर्दोष बताते हुए मुकदमे को आपसी रंजिश का परिणाम बताया था। अदालत ने दोनों पक्षों की दलीलों, उपलब्ध साक्ष्यों और गवाहों के बयानों पर गहन विचार किया।

तेज रफ्तार बाइक ने युवती को मारी टक्कर,गंभीर घायल जिला अस्पताल रेफर,स्कूल के पास हादसा

सोनभद्र। सोनभद्र के ओबरा थाना क्षेत्र के गजराज नगर स्थित ग्रीन माउंटेन स्कूल के पास शुक्रवार को एक तेज रफ्तार

बाइक ने सड़क पार कर रही एक युवती को टक्कर मार दी। इस हादसे में युवती गंभीर रूप से घायल हो गई, जिसके बाद उसे तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) चोपन ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए उसे जिला अस्पताल लोढ़ी रेफर कर दिया गया। घायल युवती की पहचान 22 वर्षीय अंजू माली के रूप में हुई है, जो ओबरा निवासी अशोक माली की पुत्री हैं। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, युवती सड़क पार कर रही थी तभी एक अनियंत्रित बाइक ने उसे जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि युवती सड़क पर गिर गई और उसके सिर में गंभीर चोट आई। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। आसपास मौजूद लोगों और पड़ोसियों ने तुरंत अंजू की मदद की और बिना देर किए उसे सीएचसी चोपन पहुंचाया। सीएचसी चोपन में मौजूद डॉक्टर फैज ने बताया कि अंजू माली के सिर में गंभीर चोट पाई गई थी। प्राथमिक उपचार के बाद उसकी स्थिति को देखते हुए उसे जिला अस्पताल रेफर किया गया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि घायल युवती को उसके पड़ोसी अस्पताल लेकर आए थे। यह दुर्घटना ओबरा थाना क्षेत्र के गजराज नगर में ग्रीन माउंटेन स्कूल के पास हुई। इस घटना के बाद स्थानीय लोगों ने प्रशासन से तेज रफ्तार वाहनों पर प्रभावी नियंत्रण लगाने और दुर्घटना संभावित क्षेत्रों में आवश्यक सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने की मांग की है।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

डिशवॉशिंग लिक्विड में खतरनाक रसायन हो सकते हैं-केमिकल फ्री प्रोडक्ट लें, बरतें 11 सावधानियां

नयी दिल्ली। बर्तन धोने के लिए ज्यादातर लोग डिशवॉशिंग

लिक्विड या सोप इस्तेमाल करते हैं। इसके बाद हमें ये तसल्ली हो जाती है कि बर्तन साफ और सुरक्षित हैं। लेकिन क्या आपने कभी ये सोचा है कि साफ व चमकते हुए बर्तन भी हमारी सेहत को नुकसान पहुंचा सकते हैं। दरअसल कुछ डिशवॉशिंग लिक्विड के केमिकल अवशेष बर्तनों पर रह सकते हैं। ये केमिकल्स खाने के साथ शरीर में जा सकते हैं। इस बारे में फरवरी, 2023 में 'द जर्नल ऑफ एलर्जी एंड क्लिनिकल इम्यूनोलॉजी' में एक स्टडी पब्लिश हुई। इसके मुताबिक, डिशवॉशर में इस्तेमाल होने वाले रिंस एजेंट्स के अवशेष आंतों की प्रोटेक्टिव लेयर को डैमेज कर सकते हैं। कुछ केमिकल हॉर्मोनल असंतुलन और एलर्जी की वजह बन सकते हैं। इसलिए आज हम डिशवॉशिंग लिक्विड के इस्तेमाल से होने वाले नुकसान की बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि-डिशवॉशिंग लिक्विड में कौन-से केमिकल्स होते हैं? इसके क्या साइड इफेक्ट्स हो सकते हैं? बर्तन साफ करने का

सुरक्षित तरीका क्या है? एक्सपर्ट डॉ. अरविंद अग्रवाल, डायरेक्टर, इंटरनल मेडिसिन, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल

इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से- सवाल- डिशवॉशिंग लिक्विड क्या है और यह कैसे काम करता है? जवाब- यह एक क्लीनिंग प्रोडक्ट है, जिससे बर्तन साफ किए जाते हैं। इससे बर्तनों में चिपका तेल और गंदगी आसानी से हट जाते हैं। इसमें मौजूद सर्फैक्टेंट तेल और गंदगी को छोटे कणों में तोड़ देते हैं, जो पानी के साथ बह जाते हैं। कुछ लिक्विड और सोप में एंजाइम व हार्ड अल्कलाइन्स भी होते हैं, जो जिद्दी दाग और जमी चिकनाई को साफ करते हैं। सवाल- डिशवॉशिंग लिक्विड में कौन से केमिकल्स हो सकते हैं?

जवाब- इनमें सर्फेक्टेंट्स, फ्रेगरेंस, प्रिजर्वेटिव्स, डाई और एंटीबैक्टीरियल एजेंट्स हो सकते हैं। इसके अलावा कुछ अन्य केमिकल्स इनडायरेक्टली मौजूद हो सकते हैं। ये ब्रांड्स के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। नीचे दिए ग्राफिक में डिशवॉशिंग लिक्विड में यूज होने वाले संभावित केमिकल्स की लिस्ट देखिए-सर्फेक्टेंट (एसएलएस,एसएलईसी) चिकनाई हटाने के लिए। फॉस्फेट्स बेहतर सफाई के लिए। अल्कोहल एथॉक्सिलेट्स गंदगी हटाने के लिए। सिंथेटिक फ्रेगरेंस खुशबू के लिए। थैलेट्स खुशबू रोकने के लिए। ट्राइक्लोसन एंटीबैक्टीरियल एजेंट।

सवाल- क्या बर्तन धोने के बाद भी डिशवॉशिंग सोप के बारीक पार्टिकल्स बर्तन में छूटे रह सकते हैं? जवाब- हां, ज्यादा लिक्विड इस्तेमाल करने या बर्तनों को ठीक से रिंस न करने पर सूक्ष्म केमिकल अवशेष रह सकते हैं। ये दिखाई नहीं देते, लेकिन खाने के जरिए शरीर में जा सकते हैं। सवाल- डिशवॉशिंग सोप के ये छोटे पार्टिकल्स हमारी सेहत को कैसे नुकसान पहुंचा सकते हैं? जवाब- ये सूक्ष्म कण खाने के साथ शरीर में जा सकते हैं। इससे कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। सवाल- डिशवॉशिंग लिक्विड में आर्टिफिशियल फ्रेगरेंस होती है। क्या इसे इनहेल करना भी नुकसानदायक हो सकता है? जवाब- हां, इससे कुछ लोगों में नाक-गले में जलन, छींक, सिरदर्द, एलर्जी और सांस संबंधी दिक्कत हो सकती है। अस्थमा के लक्षण भी बढ़ सकते हैं। सवाल- डिशवॉशिंग लिक्विड के केमिकल्स और आर्टिफिशियल फ्रेगरेंस किन लोगों के लिए ज्यादा खतरनाक हो सकते हैं? जवाब- इसके फ्रेगरेंस कुछ लोगों के लिए ज्यादा नुकसानदायक हो सकते हैं। जैसेकि- जिन्हें अस्थमा या सांस की एलर्जी है।

जिनकी स्किन सेंसिटिव है। जिन्हें स्किन संबंधी समस्या है। जिन्हें हॉर्मोनल प्रॉब्लम है। छोटे बच्चे और बुजुर्ग। गर्भवती महिलाएं। पालतू जानवर। सवाल- क्या सभी डिशवॉशिंग लिक्विड में हानिकारक केमिकल्स होते हैं या कुछ सुरक्षित विकल्प भी उपलब्ध हैं? जवाब- सभी डिशवॉशिंग लिक्विड में एक जैसे केमिकल्स नहीं होते। कुछ प्रोडक्ट्स कम केमिकल वाले होते हैं और कुछ घरेलू या डीआईवाई विकल्प भी उपलब्ध हैं। हमेशा लेबल पढ़कर ह्यूमन-सेफ इंग्रीडिएंट वाले प्रोडक्ट चुनें। सवाल- क्या डिशवॉशर में बर्तन धुलने पर भी केमिकल इनहेलिंग का रिस्क होता है? जवाब- हां, डिशवॉशर की भाप के साथ कुछ केमिकल हवा में मिल सकते हैं। मशीन खोलते समय यह भाप सांस के जरिए अंदर जा सकती है, जिससे कुछ लोगों में जलन या सांस की परेशानी हो सकती है।

सवाल- बर्तन धोने का सुरक्षित तरीका क्या है? जवाब- इसके लिए कुछ बातों का खास ख्याल रखें- कम मात्रा में डिशवॉशिंग लिक्विड इस्तेमाल करें। बर्तनों को बहते साफ पानी में अच्छी तरह रिंस करें। तेज खुशबू और ज्यादा केमिकल वाले प्रोडक्ट से बचें। फ्रेगरेंस-फ्री या कम केमिकल वाला विकल्प चुनें। बर्तन धोते समय दस्ताने पहनें और किचन में वेंटिलेशन रखें। बर्तन धुलने के बाद हाथों को अच्छी तरह साफ पानी से धोएं। डिशवॉशर इस्तेमाल करते समय सही मात्रा और सही मोड का चयन करें।

सवाल- डिशवॉशिंग लिक्विड चुनते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? जवाब- मार्केट से डिशवॉशिंग लिक्विड खरीदते समय कुछ बातों का खास ख्याल रखें। जैसेकि- ऐसे प्रोडक्ट चुनें, जिनमें फॉस्फेट, एसएलएस,एसएलईसी, थैलेट्स और सिंथेटिक फ्रेगरेंस न हों। भरोसेमंद ब्रांड और क्लीयर इंग्रीडिएंट लिस्ट वाले प्रोडक्ट लें। बहुत ज्यादा झाग बनाने वाले लिक्विड से बचें। संभव हो तो ऑर्गेनिक या प्लांट बेस्ड लिक्विड लें। खरीदने से पहले लेबल ध्यान से पढ़ें।

क्या आपके भोजन में एंटीबायोटिक है? ये लिवर, किडनी डैमेज कर सकता है,कैसे चुनें सुरक्षित भोजन

जयपुर। क्या आपने कभी सोचा है कि आप जो खाना खा रहे हैं, उसमें एंटीबायोटिक भी हो सकता है? सुनकर हैरानी हो सकती है, लेकिन ये सच है। मीट, दूध, अंडे और यहां तक कि फल-सब्जियों के जरिए भी एंटीबायोटिक हमारे शरीर तक पहुंच सकता है। दरअसल, पशुपालन और फूड प्रोडक्शन के दौरान इस्तेमाल होने वाली दवाएं कई बार भोजन में अवशेष के रूप में रह जाती हैं। ये मात्रा भले ही बहुत कम हो, लेकिन लंबे समय तक इसे खाने से सेहत बिगड़ सकती है। दुनिया भर में एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस को लेकर जो चिंता जताई जा रही है, उसमें एक बड़ा कारण सीधे फूड के जरिए हमारी थाली तक पहुंच रहे एंटीबायोटिक्स भी हैं। पाचन और इम्यून सिस्टम कमजोर होने से लेकर गंभीर बीमारी तक, इसके कई खतरनाक नतीजे हो सकते हैं। इसलिए 'जरूरत की खबर' में आज फूड में शामिल एंटीबायोटिक की बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- एंटीबायोटिक खाने में कैसे आते हैं? कौन से फूड आइटम्स ज्यादा रिस्की हैं? अपने लिए सुरक्षित भोजन कैसे चुनें? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. रोहित शर्मा, कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- क्या सच में हमारे भोजन में एंटीबायोटिक मौजूद होते हैं? जवाब- हां, ये सच है। ऐसा हमेशा 100 फीसदी मामलों में नहीं होता, लेकिन काफी बड़े पैमाने पर होता भी है। आमतौर पर एनिमल प्रोडक्ट्स जैसे मीट, अंडा और दूध के जरिए एंटीबायोटिक हमारी थाली तक पहुंचता है। सवाल- एंटीबायोटिक खाने में आते कैसे हैं? जवाब- इसे पॉइंटर्स में विस्तार से समझिए- पशुओं को दवा देना मुर्गी, गाय, भैंस, मछली आदि को इलाज के दौरान एंटीबायोटिक दिए जाते हैं। कभी-कभी प्रोडक्शन बढ़ाने के लिए भी इनका उपयोग किया जाता है। विथड्रॉल पीरियड फॉलो न करना जानवरों को दवा देने के बाद कुछ समय तक उनके दूध या मांस का उपयोग करना मना

होता है। अगर यह नियम फॉलो न किया जाए तो दवा के अवशेष भोजन में आ सकते हैं। मछलियों को एंटीबायोटिक देनाः-तालाब या फार्म में मछलियों को बीमारियों से बचाने के लिए पानी में एंटीबायोटिक मिलाए जाते हैं, जो मछलियों के शरीर में जमा हो सकते हैं। गलत डोज देनाः- अगर एंटीबायोटिक जरूरत से ज्यादा या डॉक्टर के कंसल्टेशन के बिना दी जाए तो उनके अवशेष रहने का रिस्क बढ़ जाता है। खेती में कीटनाशकों का इस्तेमालः- फार्मिंग के दौरान अगर सही मात्रा से ज्यादा कीटनाशक यूज किए जाएं तो उनके अवशेष भी फल-सब्जियों में बचे रह जाते हैं। सवाल- किन फूड आइटम्स में एंटीबायोटिक होने की संभावना ज्यादा होती है? जवाब- जो फूड सीधे पशुपालन या एक्वाकल्चर (मछली और अन्य जलीय जीवों का पालन) से आते हैं, उनमें एंटीबायोटिक के अवशेष होने का रिस्क ज्यादा होता है। इन फूड्स में हो सकता है एंटीबायोटिकः- दूध, दही, पनीर, अंडे, चिकन, मटन, बीफ, मछली, सी-फूड, सॉसेज, नगेट्स। सवाल- क्या पौधों/सब्जियों में भी एंटीबायोटिक हो सकते हैं?जवाब- हां, खेती में भी कीटनाशककों का इस्तेमाल होता है। मानक लिमिट से ज्यादा यूज करने पर इसके अंश हमारे भोजन तक पहुंच सकते हैं। पौधों पर दवा का छिड़कावः-फसलों को कीड़ों, फंगस आदि से बचाने के लिए कीटनाशकों का का इस्तेमाल किया जाता है। एनवायर्नमेंटल पॉल्यूशनः- इंडस्ट्रियल वेस्ट या दवाइयों के गलत तरीके से निस्तारण से भी

मिट्टी और पानी प्रभावित हो सकते हैं। जैविक खादः-अगर पशुओं को एंटीबायोटिक दिए गए हों तो उनके गोबर से बनी खाद में दवा के अंश हो सकते हैं। इससे एंटीबायोटिक पौधों तक जा सकता है। दूषित पानी से सिंचाईः-अगर सिंचाई में ऐसा पानी इस्तेमाल हो, जिसमें एंटीबायोटिक हों तो मिट्टी के जरिए पौधों तक पहुंच सकता है। सवाल- भोजन के जरिए शरीर में जाने वाले ये एंटीबायोटिक कितने खतरनाक हैं? जवाब- ये एंटीबायोटिक आमतौर पर बहुत कम मात्रा में होते हैं। इसलिए ये तुरंत कोई नुकसान नहीं करते। हालांकि, इन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इससे लंबे समय में गंभीर नुकसान हो सकते हैं। एलर्जिक रिएक्शंस, हाइपरसेंसिटिविटी, एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस, डाइजेस्टिव सिस्टम पर असर हॉर्मोनल इंबैलेंस मेटाबॉलिक प्रॉब्लम्स टॉक्सिसिटी लिवर, किडनी पर दबाव। भोजन के जरिए शरीर में जाने वाले एंटीबायोटिक अवशेष से कई तरह की हेल्थ प्रॉब्लम्स हो सकती हैं। डाइजेशन- डायरिया, कब्ज पेट दर्द, गैस, ब्लोटिंग इन्फेक्शन बार-बार इन्फेक्शन होना। मामूली संक्रमण गंभीर होना। सर्दी-जुकाम देर तक रहना। इरिटेबल बाउल सिंड्रोम, गट माइक्रोबायोम इंबैलेंस, एलर्जी, स्किन रैश, खुजली, गंभीर एलर्जी, हॉर्मोनल प्रॉब्लम्स, हॉर्मोनल इंबैलेंस बच्चों की ग्रोथ रुकना, जल्दी या देर से प्युबर्टी, मेंट प्रॉब्लम्स, मूड स्विंग्स, एंजाइटी डिप्रेशन, मेटाबॉलिक समस्याएं ओबिसिटी स्लो मेटाबॉलिज इंसुलिन रेजिस्टेंस, ऑर्गन्स पर असर, लिवर टॉक्सिसिटी किडनी डैमेज।

सवाल- क्या इसका सीधे साइड इफेक्ट होता है या लंबे समय में असर दिखता है? जवाब- ये एंटीबायोटिक की मात्रा पर निर्भर करता है। अगर भोजन में एंटीबायोटिक की मात्रा ज्यादा है तो तुरंत साइड इफेक्ट दिख सकते हैं। अगर एंटीबायोटिक की मात्रा कम है तो लंबे समय में इसके नुकसान सामने आ सकते हैं। सवाल- क्या इससे 'एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस' भी बढ़ सकता है? जवाब- हां, इसका सबसे बड़ा रिस्क एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस ही है। अगर भोजन के जरिए बार-बार एंटीबायोटिक शरीर में जा रहे हैं तो शरीर में मौजूद बैक्टीरिया उन दवाओं के आदी हो जाते हैं। धीरे-धीरे ये बैक्टीरिया खुद को इस तरह बदल लेते हैं कि दवाएं उन पर असर करना बंद कर देती हैं। सवाल- भारत में कौन-सी एजेंसियां फूड में एंटीबायोटिक कंट्रोल करती हैं? जवाब- इसके लिए भारत में कई एजेंसियां मिलकर काम करती हैं- 1. फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एफएसएसएआई) यह भारत में फूड्स से जुड़े सभी मानक तय करती है। 2. स्टेट फूड सेफ्टी अथॉरिटीजः-दुकानों, डेयरी, मीट शॉप आदि की जांच करती हैं।सैंपल लेकर लैब में टेस्ट करती हैं। 3. सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशनः- दवाओं की मंजूरी, क्लिनिकल ट्रायल्स और क्वालिटी तय करती हैं। 4. डिपार्टमेंट ऑफ एनिमल हसबेंडरी एंड डेयरिंगः- डेयरी, पोल्ट्री, एनिमल हेल्थ से जुड़े नियम बनाता है। पशुओं में दवाओं के सही उपयोग के दिशा-निर्देश देता है। सवाल- एफएसएसएआई ने एंटीबायोटिक की क्या लिमिट तय की है? जवाब- एफएसएसएआई के अनुसार, एंटीबायोटिक की सीमा दवा, फूड्स और उपयोग पर निर्भर करती है। सामान्य एंटीबायोटिक्स के लिए सीमा लगभग 0.01एमजी/केजी होती है। खतरनाक एंटीबायोटिक्स जैसे क्लोरोफेनिकोल के लिए यह बहुत कम (लगभग 0.0003 एमजी/केजी) होती है। कुछ मामलों में 0.001 एमजी/केजी या उससे कम लिमिट होती है। सवाल- कैसे पता चलता है कि खाने में एंटीबायोटिक है? जवाब- इसे देखकर, स्वाद या स्मेल से पता नहीं लगाया जा सकता है। इसके लिए लैब टेस्ट जरूरी है। 'फूड सेफ्टी स्टैंडर्ड अथॉरिटी ऑफ इंडिया' के अनुसार 'माइक्रोबियल इनहिबिशन टेस्ट, ੯ੴ और ੴ-ੲੲ/ੲੲ' जैसे टेस्ट से एंटीबायोटिक की मौजूदगी और मात्रा का पता चलता है। दूध के लिए कुछ रैपिड टेस्ट किट भी उपलब्ध हैं, लेकिन सबसे सटीक रिजल्ट लैब टेस्ट से ही मिलते हैं। सवाल- क्या आम उपभोक्ता खुद इसे पहचान सकते हैं? जवाब- नहीं, आम उपभोक्ता खुद से फूड्स में एंटीबायोटिक की मात्रा नहीं पता कर सकते, क्योंकि रंग, स्वाद और गंध से इसका पता नहीं चलता है। उपभोक्ता केवल विश्वसनीय ब्रांड, एफएसएसएआई लाइसेंस वाले प्रोडक्ट खरीदकर इसके रिस्क को कम कर सकते हैं। सवाल- हम एंटीबायोटिक्स से कैसे बच सकते हैं? जवाब- इसके लिए इन 8 बातों का ध्यान रखें- 'फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया' लाइसेंस वाले प्रोडक्ट ही खरीदें।दूध, मीट और अंडे भरोसेमंद ब्रांड से ही लें। बहुत सस्ते या संदिग्ध सोर्स से फूड्स न लें। भोजन को अच्छी तरह पकाकर खाएं। कच्चे और पके भोजन को अलग रखें। रसोई और हाथों की साफ-सफाई बनाए रखें। ऑर्गेनिक या सर्टिफाइड प्रोडक्ट्स को प्राथमिकता दें। स्थानीय विश्वसनीय दुकानदार या सप्लायर से ही खरीदारी करें। सवाल- क्या ऑर्गेनिक फूड्स पूरी तरह सुरक्षित हैं? जवाब- नहीं, इसे पूरी तरह सुरक्षित नहीं कहा जा सकता है, लेकिन ये कुछ हद तक बेहतर होते हैं। क्यों पूरी तरह सुरक्षित नहीं? ऑर्गेनिक में भी कीटनाशक उपयोग होते हैं। मिट्टी, पानी या हैंडलिंग से बैक्टीरिया/संक्रमण आ सकता है। गलत स्टोरेज या गंदगी से रिस्क बढ़ सकता है। फिर भी बेहतर क्यों माना जाता है? सिंथेटिक केमिकल और एंटीबायोटिक का उपयोग कम होता है। फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया जैसे नियमों के तहत सर्टिफाइड होता है। सवाल- क्या खाने को पकाने से एंटीबायोटिक खत्म हो जाते हैं? जवाब- नहीं, खाने को पकाने से एंटीबायोटिक पूरी तरह खत्म नहीं होते। कई एंटीबायोटिक हीट-स्टेबल होते हैं यानी गर्मी सहन कर लेते हैं। उबालने या पकाने से उनकी मात्रा थोड़ी कम हो सकती है, पर पूरी तरह नहीं खत्म होती है। इसलिए फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के मानकों वाले फूड्स ही लें। सवाल- डॉक्टर्स इस बारे में क्या कहते हैं? जवाब- डॉ. रोहित शर्मा के मुताबिक, खाने में एंटीबायोटिक अवशेष एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या बन सकते हैं।भोजन के जरिए शरीर में बार-बार एंटीबायोटिक जाने से शरीर में एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस बढ़ सकता है, जिससे दवाएं बेअसर हो सकती हैं। इसके कारण सामान्य संक्रमण भी गंभीर हो सकता है। इसलिए हमेशा सुरक्षित भोजन करें। सवाल- न्यूट्रिशनिस्ट और फूड साइंटिस्ट इस बारे में क्या कहते हैं? जवाब- खाने में एंटीबायोटिक अवशेष लॉन्ग टर्म में हेल्थ प्रॉब्लम्स बढ़ा सकते हैं। यह गट माइक्रोबायोम को प्रभावित कर सकते हैं। लगातार एक्सपोजर से एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस बढ़ सकता है। इम्यूनिटी और पाचन पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। बच्चों और बुजुर्गों पर ज्यादा प्रभाव होता है।

सूझबूझ इसी में कि हम पड़ोसियों के साझेदार बनें

एक प्रमुख शक्ति के रूप में भारत का उदय स्थिर और सहयोगी पड़ोस की अपेक्षा करता है। कोई भी देश अपने आस-पड़ोस के स्ट्रैटेजिक परिवेश का प्रबंधन किए बिना दुनिया में दबदबे का दावा नहीं कर सकता। 1985 में सार्क की स्थापना के पीछे यही तर्क था। किंतु 2016 में पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकवाद के कारण इस्लामाबाद में प्रस्तावित 19वें शिखर सम्मेलन के रद्द होने के बाद से यह संगठन निष्प्राण-सा हो गया है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जब देशों ने अपनी आपसी प्रतिद्वंद्विताओं को पीछे छोड़कर क्षेत्रीय सहयोग की संस्थाओं का निर्माण किया। ऐसी संस्थाएं इसलिए अस्तित्व में आईं, क्योंकि नेताओं ने यह समझ लिया था कि भूगोल एक स्थायी हकीकत है, जबकि संघर्ष महज एक विकल्प है। चुनौती यह थी कि भौगोलिक निकटता को तनाव के स्रोत से बदलकर सामूहिक तरक्की के साधन में बदला जाए। इसका सबसे उल्लेखनीय उदाहरण ईयू है। ब्रिटेन और फ्रांस सदियों तक प्रतिद्वंद्वी रहे। जर्मनी ने इन दोनों के विरुद्ध विनाशकारी युद्ध लड़े। यूरोप राष्ट्रीय पहचानों की रक्षा को लेकर अत्यधिक संवेदनशील था। फिर भी, विश्वयुद्धों की त्रासदी के बाद यूरोप ने धीरे-धीरे महसूस किया कि समृद्धि और सुरक्षा का मार्ग टकराव नहीं, बल्कि सहयोग से होकर जाता है। परिणामस्वरूप एक ऐसी प्रक्रिया आरंभ हुई, जो अंततः ईयू के रूप में विकसित हुई। यह आधुनिक इतिहास में क्षेत्रीय एकीकरण के सबसे सफल उदाहरणों में से एक है।अफ्रीकी संघ का उदय भी उन सीमाओं के बावजूद हुआ था, जिन्हें औपनिवेशिक शक्तियों ने मनमाने ढंग से निर्धारित किया था। वहां जातीय संघर्ष तथा अंतर-राज्यीय विवाद भी थे। आसियान भी ऐसे देशों को एक मंच पर लाया, जो पहले पारस्परिक अविश्वास और संघर्ष के अनुभव से गुजर चुके थे। इंडोनेशिया और मलेशिया 1960 के दशक में कोनफ्रोंतासी संघर्ष में उलझे थे। 1965 में मलेशिया से सिंगापुर का अलगाव कटु परिस्थितियों में हुआ था। थाईलैंड और कंबोडिया के बीच लंबे समय से सीमा-विवाद थे। फिर भी, आसियान एक अत्यंत प्रभावी क्षेत्रीय मंच के रूप में विकसित हुआ, क्योंकि उसके सदस्य देशों ने यह समझ लिया था कि आर्थिक विकास और सामरिक स्थिरता का सर्वोत्तम मार्ग सामूहिक प्रयासों से होकर जाता है। इसी प्रकार, अमेरिकी राष्ट्रों का संगठन (ओएएस) भी उन देशों के बीच स्थापित हुआ, जिनका इतिहास क्षेत्रीय विवादों, वैचारिक विभाजनों और राजनीतिक अस्थिरता से भरा हुआ था। इन सभी उदाहरणों में एक महत्वपूर्ण तत्व साझा सांस्कृतिक और सभ्यतागत संबंधों का अस्तित्व था। यही तर्क दक्षिण एशिया पर भी समान रूप से लागू होता है। राजनीतिक मतभेदों के बावजूद दक्षिण एशिया में गहन सभ्यतागत एकता विद्यमान रही है। इस क्षेत्र के लोग इतिहास, भाषा, धर्म, भोजन, संस्कृति, साहित्य, संगीत और पारिवारिक-सामाजिक संबंधों के ऐसे नेटवर्कों से जुड़े हैं, जिनका अस्तित्व आधुनिक राष्ट्र-राज्यों के उदय से बहुत पहले से रहा है। लेकिन अफसोस कि सार्क की प्रगति भारत और पाकिस्तान के तनावपूर्ण संबंधों की बंधक बनकर रह गई। दशकों से चले आ रहे अविश्वास ने सामूहिक पहलों को पंगु बना दिया। चीन ने भी क्षेत्रीय विभाजनों का लाभ उठाकर अपने सामरिक हितों को आगे बढ़ाने के अवसर देखे। इसके बावजूद सार्क के पीछे निहित तर्क आज भी उतना ही प्रासंगिक है। दक्षिण एशिया के साथ भारत का संबंध केवल भौगोलिक ही नहीं, सभ्यतागत भी है। बौद्ध धर्म के माध्यम से भारत और श्रीलंका के संबंध गहरे हैं। नेपाल के भारत के साथ सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध स्थायी हैं। बांग्लादेश भारत के साथ गहरे भाषाई, ऐतिहासिक और भावनात्मक संबंध साझा करता है। यहां तक कि पाकिस्तान के साथ भी हमारा साझा इतिहास, संस्कृति, भाषा, साहित्य और संगीत की सदियों पुरानी विरासत मानवीय संबंधों का एक सशक्त आधार प्रदान करती है। समाधान सार्क को त्यागने में नहीं, बल्कि धैर्य और व्यावहारिकता के साथ उसे पुनर्जीवित करने में है। विश्वास रातों-रात निर्मित नहीं किया जा सकता। किंतु जब लोग व्यापार, पर्यटन, शैक्षिक आदान-प्रदान, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, परस्पर संपर्क, ऊर्जा सहयोग आदि के माध्यम से सहयोग के लाभों का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, तब वे स्वयं उस सहयोग के पैरोकार भी बन जाते हैं। एक उभरती हुई प्रमुख शक्ति के रूप में भारत के लिए पहली प्राथमिकता अपने निकटवर्ती पड़ोस को मजबूत बनाना होना चाहिए। दक्षिण एशिया के भूगोल ने हमें पड़ोसी बनाया है। लेकिन सूझबूझ इसी में है कि हम सहयोगी भी बनें। भूगोल एक स्थायी हकीकत है, जबकि संघर्ष महज एक विकल्प है। ऐसे में चुनौती यह है कि भौगोलिक निकटता को तनाव के स्रोत से बदलकर सामूहिक तरक्की के साधन में बदला जाए। इतिहास भी यही सबक सिखाता है। (ये लेखक के अपने विचार हैं,पवन के. वर्मा)

कला को पनपना है तो अमीरों को सहायता और शिक्षितों को प्रोत्साहन देना चाहिए

आईपीएल पूरा होने की वजह से लंबे समय बाद किसी रविवार की शाम मुझे लगा कि मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं था। परिवार ने एकाएक तय किया कि मुंबई के बांद्रा स्थित नीता मुकेश अंबानी कल्चरल सेंटर (एनएमएसीसी) चलें। वहां हम पारंपरिक भरतनाट्यम नृत्य शो 'इकोज ऑफ तंजावुर-द अनब्रोकन' देखने पहुंचे। 125 सीटों वाले छोटे किन्तु पूरे भर चुके एक्सपेरिमेंटल थिएटर में मेरी नजर एक परिचित चेहरे पर पड़ी। मेरी तथाकथित इंटेलिजेंस तुरंत सक्रिय हुई, सवाल उठाया कि 'ये यहां कैसे? इनका तो इस कार्यक्रम से कोई संबंध नहीं है।' मैंने अंदाजा लगाया कि उनकी उम्र इस छोटे ऑडिटोरियम की कुल बैठक क्षमता की लगभग आधी होगी। फिर भी, वे पूरी तरह से उस शास्त्रीय नृत्य कला में खोए थे, जो तंजावुर जिले की विरासत है। इसी स्थान से मैं भी आता हूं। उसी क्षण मेरे दिमाग ने मुझे सोमवार के लेख का विषय दे दिया। दिमाग ने शो खत्म होते ही उनका इंटरव्यू लेने का निर्देश दिया। मेरा योजनाबद्ध और उत्सुकता भरा पहला सवाल यही होने वाला था कि 'आप यहां कैसे?' फिर लगा कि किसी वरिष्ठजन से ऐसा सवाल पूछना कितना मूर्खतापूर्ण होता। वे 73 वर्षीय अनंग देसाई थे, जिन्हें कल्ट-क्लासिक सिटकॉम 'खिचड़ी' में चिड़चिड़े लेकिन सबके चहेते परिवार के मुखिया 'बाबूजी' (तुलसीदास पारेख) के किरदार के लिए जाना जाता है। 100 से अधिक टीवी शो और 70 फिल्मों के करियर वाले देसाई का पालन-पोषण अहमदाबाद में हुआ। उनके पिता कार्डियोलॉजिस्ट और मां सिंगर व पेंटर थीं। अपनी कला को नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा तथा फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया में निखारने के कारण उनकी कलात्मक समझ बेहद गहरी है। बात की तो वे मुस्कराए और बोले, 'कला तो कला है। मुझे हर रूप में कला से प्रेम है।' वे इससे ज्यादा सही नहीं हो सकते थे। जो परफॉर्मेंस हमने देखी, वो तंजावुर क्वार्टेट से उपजी है। प्रिया मुरले, लेखा प्रसाद और स्नेहा महेश विशाल द्वारा प्रस्तुत यह नृत्य कला सर्फोजी-द्वितीय (1777-1832) के राजदरबार में विकसित हुई थी। सर्फोजी-द्वितीय तंजावुर के दूरदर्शी मराठा शासक थे, जिनके दौर में व्यापक सांस्कृतिक, शैक्षणिक और वैज्ञानिक पुनर्जागरण हुआ था। उनका दरबार उत्कृष्ट संगीतकारों, रचनाकारों और उन नट्टुवनारों को एक मंच पर लाया, जो मंजीरे बजा कर लयबद्ध बोलों के जरिए नर्तकों का मार्गदर्शन करते थे। कार्यक्रम की खूबसूरती कई अप्रत्याशित रूपों में सामने आई। प्रिया ने पैरों से नृत्य नहीं किया, बल्कि आंखों की अभिव्यक्ति से पूरी कहानी बताई। बेहद खूबसूरती से भगवान कृष्ण और कुचेला (सुदामा) की निःस्वार्थ मित्रता और दिव्यता जीवंत की। मैंने उनसे जाकर कहा, 'वाह, आज एहसास हुआ कि कोई सिर्फ आंखों से भी पूरी कहानी कह सकता है।' इसे भरतनाट्यम की भाषा में 'अभिनयम' कहते हैं। वहीं, लेखा और स्नेहा ने भगवान शिव की स्तुति में 'कीर्तनम' प्रस्तुत किया और उनकी जटिल, ब्रह्मांडीय मुद्राओं को अद्भुत सौंदर्य के साथ साकार किया। उस शाम मुझे एहसास हुआ कि ऐसे हेरिटेज आर्ट फॉर्म्स को मुख्यधारा का ऐसा मंच देना कितना मूल्यवान होता है, जहां वर्ल्ड क्लास थिएटर में वैश्विक मानकों की साउंड, लाइटिंग और मंच सज्जा हो। यह निश्चित ही विचारणीय है। 90 मिनट के कार्यक्रम के बाद मेरा मन दो वर्गों के प्रति कृतज्ञता से भर गया। पहले, वे समृद्ध लोग जिन्होंने ऐसा ठिकाना बनाया और उभरती प्रतिभाओं के लिए इसे खोला, ताकि संस्कृति फल-फूल सके। दूसरे, वे बुद्धिमान दर्शक जिन्होंने हर सीट भर दी, कला को समझा और सही समय पर तालियां बजाईं। इससे कलाकारों को लगा कि वे ऐसे दर्शकों के सामने प्रस्तुति दे रहे हैं, जो कला की बारीकियों को अच्छे-से समझते हैं। अनंग देसाई इस दूसरे वर्ग का एक शानदार उदाहरण थे। फंडा यह है कि कला की एक यूनिवर्सल भाषा होती है, जो हर भाषाई सीमा के परे है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक हमारी समृद्ध विरासत को सच में सुरक्षित रखना है तो अमीरों को आर्थिक सहायता देकर ऐसे ठिकाने मुहैया कराने होंगे, जहां संस्कृति फल-फूल सके और शिक्षित लोगों को उसे जिंदा रखने के लिए बौद्धिक सराहना देनी होगी।एन. रघुरामन

स्त्री की सुगंध!

स्त्री...जब भगवान ने स्त्री की रचना की, तो उस शुक्रवार को वे देर रात तक काम करते रहे...तब एक देवदूत ने पूछा, 'इतना समय क्यों लग रहा है?' भगवान बोले, 'उसे गढ़ने के लिए मुझे कितनी सारी शर्तें पूरी करनी पड़ती हैं, देखा है तुमने?' उसे हर परिस्थिति में काम करना आना चाहिए। वो एक साथ कई बच्चों की देखभाल कर सके। उसकी एक झप्पी घुटने के घाव से लेकर टूटे हुए दिल तक – सब ठीक कर दे। और ये सब उसे केवल दो हाथों से करना है। बीमार होने पर भी वो स्वयं को संभालती है और दिन में 18 घंटे काम कर सकती है। देवदूत हैरान हो गया, 'केवल दो हाथ? नामुमकिन!' 'और ये तो आम डिज़ाइन है?' देवदूत स्त्री के पास गया और उसे छूकर बोला, 'प्रभु, आपने इसे बहुत ही कोमल बनाया है।' भगवान ने कहा, 'वो कोमल है, पर मैंने उसे बहुत मज़बूत बनाया है। वो कितना सह सकती है और कितनी मुश्किलों को पार कर सकती है, तुम सोच भी नहीं सकते।' देवदूत ने पूछा, 'क्या ये सोच सकती है?' भगवान बोले, 'ये केवल सोचती ही नहीं, तर्क लगाती है, निर्णय लेती है और बातचीत भी करती है।' देवदूत ने उसके गाल को छुआ...'प्रभु, यहाँ से कुछ टपक रहा है! आपने इस पर बहुत बोझ डाल दिया है।' भगवान बोले, 'वो टपक नहीं रहा... वो आँसू हैं।' 'वो किसलिए?' देवदूत ने पूछा। भगवान ने कहा, 'आँसू उसके दुःख, शंका, प्रेम, अकेलापन, दर्द और गर्व जताने का तरीका हैं।' ये सुनकर देवदूत बहुत प्रभावित हुआ। 'प्रभु, आप सचमुच अद्भुत हैं। आपने हर चीज़ का ख्याल रखा है। वो सच में एक विलक्षण स्त्री है।' भगवान बोले, 'हाँ, वो है। उसमें पुरुष को चकित कर देने की ताकत है। वो संकटों का सामना कर सकती है और भारी ज़िम्मेदारियाँ उठा सकती है। उसके पास खुशी, प्रेम और अपनी राय होती है। चिल्लाने का मन होने पर भी वो मुस्कुराती है। रोने का मन होने पर भी वो गाती है, खुशी में रोती है और डर लगने पर भी हँसती है। जिस बात पर उसे यकीन है, उसके लिए लड़ती है। उसका प्रेम निःस्वार्थ होता है रिश्तेदार या मित्र के जाने पर उसका दिल टूटता है, पर फिर भी वो जीने की ताकत ढूंढ लेती है।' देवदूत ने पूछा, 'तो क्या वो परिपूर्ण है?' भगवान बोले, 'नहीं... उसमें केवल एक कमी है – वो अक्सर अपनी कीमत भूल जाती है।' स्त्री होना अनमोल है।

हैकिंग को रूटीन बना देना एआई की 'बुद्धिमत्ता' नहीं कहला सकती

एआई कम्पनी एंथ्रोपिक ने हाल ही में अपने लार्ज लैंग्वेज मॉडल की नवीनतम सेवा क्लॉड माइथोस प्रिव्यू को जारी किया, लेकिन यह केवल 40 बड़ी टेक-कंपनियों के सीमित समूह के लिए होगा। यह नया मॉडल परफॉर्मेंस में बुनियादी बदलावों का दावा करता है, जिसके साइबर और राष्ट्रीय सुरक्षा पर गहरे प्रभाव हो सकते हैं। क्लॉड माइथोस के डेवलपमेंट के दौरान एंथ्रोपिक ने पाया कि यह न केवल किसी भी मॉडल की तुलना में अधिक जटिलता और आसानी से सॉफ्टवेयर कोड लिख सकता है, बल्कि अपनी इस क्षमता के चलते यह दुनिया के लगभग सभी प्रमुख सॉफ्टवेयर सिस्टमों में व्याप्त कमजोरियों को भी पहले की तुलना में अधिक आसानी से खोज सकता है। लेकिन अगर यह टूल गलत हाथों में चला गया, तो वे दुनिया के लगभग हर प्रमुख सॉफ्टवेयर सिस्टम- यहां तक कि इस समूह में शामिल कंपनियों द्वारा बनाए सिस्टमों को भी हैक कर सकते हैं। यह कोई पब्लिसिटी-स्टंट नहीं है। इस घोषणा से पहले, प्रमुख टेक-कंपनियों के प्रतिनिधि ट्रम्प प्रशासन के साथ निजी तौर पर इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि इसका उन देशों की सुरक्षा पर क्या प्रभाव पड़ेगा, जो इन असुरक्षित सॉफ्टवेयर प्रणालियों का उपयोग करते हैं। एंथ्रोपिक ने अपने एक लिखित बयान में कहा कि पिछले केवल एक महीने में ही माइथोस प्रिव्यू ने हजारों गंभीर कमजोरियों की पहचान की है। ये हर प्रमुख ऑपरेटिंग सिस्टम और वेब ब्राउजर में शामिल हैं। एआई जिस तेजी से बढ़ रहा है, उसके मद्देनजर ऐसी क्षमताओं का व्यापक होना अब दूर नहीं है। और संभव है कि वे उन पक्षों से भी आगे फैल जाएं, जो इन्हें सुरक्षित रूप से उपयोग करने की बात करते हैं।सुपर-इंटेलिजेंट एआई अपेक्षा से कहीं तेजी से सामने आ रहा है। यह तो पहले से स्पष्ट था कि एआई किसी भी व्यक्ति- चाहे उसकी कम्प्यूटर साक्षरता का स्तर कुछ भी हो- को सॉफ्टवेयर कोड लिखने में असाधारण रूप से सक्षम बना रहा है। लेकिन बताया जाता है कि स्वयं एंथ्रोपिक ने भी यह अनुमान नहीं लगाया था कि यह इतनी जल्दी, इतनी दक्षता के साथ, मौजूदा कोड में खामियों को खोजने और उनका दोहन करने के तरीकों को पहचानने में सक्षम हो जाएगा। क्लॉड माइथोस ने हर प्रमुख ऑपरेटिंग सिस्टम और वेब ब्राउजर में गंभीर कमजोरियों की पहचान की है- ये ऐसे सिस्टम हैं, जिन पर दुनिया भर में बिजली ग्रिड, जल आपूर्ति तंत्र, एयरलाइन आरक्षण प्रणालियां, रीटेलिंग नेटवर्क, सैन्य प्रणालियां और अस्पताल निर्भर हैं। यदि यह टूल व्यापक रूप से उपलब्ध हो जाता है, तो इसका अर्थ होगा कि किसी भी प्रमुख बुनियादी ढांचे की प्रणाली को हैक करने की क्षमता- जो पहले केवल निजी क्षेत्र के विशेषज्ञों और खुफिया एजेंसियों तक सीमित ?थी और जो एक कठिन और महंगा कार्य था- अब हर आपराधिक तत्व, आतंकी संगठन, देश के लिए सुलभ हो सकती है। इस समस्या का समाधान दुनिया का कोई भी देश अकेले नहीं कर सकता। शुरुआत दो एआई महाशक्तियों- अमेरिका और चीन को करनी होगी। यह बहुत जरूरी हो गया है कि वे आपस में सहयोग करना सीखें, ताकि बुरी ताकतें इस साइबर क्षमता तक पहुंच न बना सकें। यह उतना ही बुनियादी महत्व का है, जितना एटमी हथियारों के बाद परमाणु अप्रसार संधियां थीं। जटिल साइबर हैकिंग अभियानों को विकसित करने की जो क्षमता पहले बड़े देशों, सेनाओं, कंपनियों और बड़े बजट वाले आपराधिक संगठनों तक सीमित थी, वह अब छोटे समूहों को भी उपलब्ध हो सकती है। ऐसे में यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि वे केवल जिम्मेदार हाथों तक ही सीमित रहें। (द न्यूयॉर्क टाइम्स से,थॉमस एल. फ्रीडमैन)

शहरों का दिल कभी गांवों के जैसा नहीं हो सकता

'नानी, मैं स्कूल जा रहा हूं!' मैं दरवाजे से चिल्लाकर कहता था और हर सुबह, उनकी तेज लेकिन प्यार से भरी हुई आवाज लौटकर आती थी : 'कितनी बार समझाऊं? ऐसा कभी नहीं कहते हैं कि मैं जा रहा हूं, कहो कि मैं स्कूल जाकर आता हूं।' मैं उनकी ओर देखे बिना मन ही मन में कभी नहीं बुदबुदाता कि 'क्या फर्क पड़ता है?' और मैं वही दोहरा देता जो उन्होंने कहा था और भाग जाता। वे दो शब्द- 'आता हूं'- सुरक्षा और आश्वासन का एक अलिखित अनुबंध थे, जिस पर हमारे बुजुर्ग भरोसा करते थे। उन्हें दरवाजे पर खड़े होकर वेव करने या चुंबन उछालने की जरूरत नहीं होती थी। वे हमें जाते हुए बेचैन आंखों से नहीं देखते थे। ये वो दिन थे जब हमारे पास कुछ भी नहीं था और इसके बावजूद हमारे पास किसी चीज की कमी नहीं थी। वे हमें नंगे पांव और खुले दिल से दुनिया में जाने देते थे, इस विश्वास के साथ कि गांव हमें सकुशल लौटा लाएगा। अगर हमारे पैर कीचड़ से भर जाते, तो हम रोते नहीं थे; बस सड़क किनारे लगे हैंडपंप से पानी निकालकर मिट्टी धो देते और कक्षा के फर्श पर आलथी-पालथी मारकर बैठ जाते। उस जमाने में हमें रिपोर्ट कार्ड की भी कोई चिंता नहीं होती थी। केवल पास या फेल मायने रखता था। तब किसी बुजुर्ग से डांट खाना रोजमर्रा की बात थी, इससे किसी को कोई मनोवैज्ञानिक आघात नहीं लगता था। अगर शरारत करने पर कोई बिल्कुल अनजान व्यक्ति हमारे कान उमेंठ देता था, तो हम वकील तलाशने नहीं निकलते थे- हम उसे स्वीकार कर लेते थे। गांव सोशल-पैरेंटिंग की परंपरा निभाता था। हम सभी के थे। तब हमारे लिए शर्म की सबसे बड़ी निशानी क्या थी? ट्यूशन जाना।1960 के दशक में अतिरिक्त कक्षाओं का मतलब यह था कि आप पहली बार में किसी बात को समझने के लिए पर्याप्त होशियार नहीं हैं। और हमारी सबसे बड़ी विलासिता क्या थी? साइकिल की आगे वाली रॉड या जंग लगे कैरियर पर बैठकर धूल भरी पगडंडियों पर तेजी से चलते चले जाना और फल तोड़ने के लिए साइकिल को किसी सीढ़ी की तरह इस्तेमाल करना। तब हमें ऐसा लगता था जैसे हमने पूरी दुनिया जीत ली हो। वो ऐसे दिन थे, जब अव्वल दर्जे की उम्मीदें सेकंड-हैंड किताबों में रहती थीं। हम किताबों के पन्नों के बीच मोरपंख और पीपल के सूखे पत्ते दबाकर रखते थे, यह भोला विश्वास करते हुए कि इससे हम बुद्धिमान बन जाएंगे। उन नाजुक, कंकाल जैसे दिखने वाले पत्तों- जो फाइन-आर्ट की तरह लगते थे- में निहित हमारा यह विश्वास हमें वह चीज देता था, जो शहर शायद ही कभी दे पाते हैं- शुद्ध और बिना कोई मिलावट वाली उम्मीद। उस समय हर पाठ्यपुस्तक पर भूरे रंग के कवर चढ़ाए जाते थे और उन्हें कपड़े से बने झोलों में करीने से रखा जाता था, क्योंकि वे केवल हमारी नहीं थीं- उन्हें अगले साल 'थर्ड-हैंड' किताबों के रूप में बेचे जाने के लिए भी सहेज रखना होता था। आठवीं कक्षा तक मैंने सेकंड-हैंड किताबों से ही पढ़ाई की थी, जब तक कि उसके बाद पाठ्यक्रम नहीं बदल गया। फिर भी हमारे माता-पिता ने कभी पढ़ाई के बोझ की शिकायत नहीं की।

जीवन सीमित साधनों वाला जरूर था, लेकिन उसमें हमें कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि हम गरीब हैं। दक्षिण भारत के 'मंदिरों का शहर' कहलाने वाले कुम्भकोणम में- जहां मैंने प्राथमिक शिक्षा के वर्षों में अपना बचपन बिताया- संस्कृति किसी पाठ्यपुस्तक में नहीं सिखाई जाती थी; वह मिट्टी में ही रची-बसी थी। हर गली-मोहल्ले में मंदिर होने के कारण सड़कें स्वयं पवित्र लगती थीं।

थाईलैंड में 3 इंडियन टूरिस्ट का अपहरण, 5 भारतीय गिरफ्तार,पाकिस्तानी के कहने पर किडनैपिंग की
सस्ते टूर पैकेज का लालच देकर पटाया बुलाया

बैंकॉक। थाईलैंड में तीन भारतीय पर्यटकों का अपहरण करके उनके परिवारों से फिरौती मांगने का मामला सामने आया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, पुलिस ने इस मामले पहले भी एक भारतीय को उसी घर में बंधक बनाया गया था। उसे तब छोड़ा गया जब उसके परिजनों ने करीब 30 लाख रुपये की फिरौती चुका दी थी। पुलिस अब मामले के मुख्य सूत्रधार

में पांच भारतीय नागरिकों को गिरफ्तार किया है। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि उन्हें एक पाकिस्तानी नागरिक ने तीनों को किडनैप करने को कहा था। पुलिस ने तीनों लड़कों को रेस्क्यू

कर लिया है। पीड़ितों की पहचान मोहित (23), आशीष (24) और हिमांशु (20) के रूप में हुई है। आरोपियों ने उन्हें सस्ते 7 दिन के टूर पैकेज का लालच देकर थाईलैंड के पटाया शहर बुलाया था। वहां पहुंचने के बाद उन्हें एक घर में बंधक बना लिया गया और उनके परिवारों से तीनों के बदले 40-40 लाख रुपए, यानी कुल 1.20 करोड़ रुपए की फिरौती मांगी गई। दुबई से निर्देश दे रहा था पाकिस्तानी मास्टरमाइंड- पुलिस के मुताबिक, गिरफ्तार आरोपियों की पहचान अवतार सिंह (38), जगजीत सिंह (38), रंभालक कुमार (24), सुखबीर सिंह (37) और कुलरा सिंह (27) के रूप में हुई है। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वे पिछले एक महीने से चैट एप्लीकेशन के जरिए दुबई में बैठे एक पाकिस्तानी नागरिक के संपर्क में थे। उसी ने अपहरण की पूरी साजिश रची थी। फिरौती की रकम क्रिप्टोकरेंसी के जरिए लेने की योजना बनाई गई थी। इसके बदले आरोपियों को नकदी, कीमती सामान और थाईलैंड से बाहर जाने के लिए एयरलाइन टिकट देने का वादा किया गया था। पीड़ितों ने पुलिस को बताया कि उन्हें कई दिनों तक भूखा रखा गया। उनके हाथ-पैर बांध दिए गए और उल्टा लटकाकर बेरहमी से पीटा गया। खून जैसा दिखाने के लिए शरीर पर लाल स्प्रे पेंट लगाया- आरोपियों ने पीड़ितों के शरीर पर लाल स्प्रे पेंट लगाया, ताकि वीडियो कॉल के दौरान ऐसा लगे कि उन्हें गंभीर चोटें आई हैं और उनके शरीर से खून बह रहा है। इन वीडियो के जरिए परिवारों पर फिरौती देने का दबाव बनाया जा रहा था। पीड़ितों के परिजनों ने भारतीय दूतावास से संपर्क किया। इसके बाद 21 जुलाई को दूतावास ने चोनबुरी इमिग्रेशन पुलिस और पटाया पुलिस को अलर्ट किया। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और खुफिया जानकारी के आधार पर पटाया के एक टाउनहाउस में छापा मारा। वहां तीनों पीड़ित अलग-अलग कमरों में बंधे हुए मिले। उनके मुंह पर टेप लगा था और शरीर पर चोट के निशान थे। पुलिस को मौके से टेप, लकड़ी का डंडा और लाल स्प्रे पेंट बरामद हुआ है। पहले भी एक टूरिस्ट को किडनैप किया गया था- रेस्क्यू किए गए पीड़ितों ने पुलिस को बताया कि उनके आने से और अन्य पाकिस्तानी संदिग्धों की तलाश कर रही है। पुलिस ने बताया कि आरोपियों को इस काम के बदले नकदी, कीमती सामान और थाईलैंड से बाहर जाने के लिए एयरलाइन टिकट का वादा किया गया था। थाईलैंड भारतीय अपराधियों का अड्डा क्यों बन रहा है? 1. आसान एंट्री और वीजा छूटः थाईलैंड में भारतीय पर्यटकों के लिए वीजा-ऑन-अराइवल की सुविधा है। अपराधी आसानी से फर्जी पासपोर्ट या टूरिस्ट वीजा पर वहां पहुंच जाते हैं। 2. बॉर्डर और साइबर स्कैम हबः थाईलैंड की सीमा म्यांमार और कंबोडिया से लगती है। म्यांमार बॉर्डर पर चीनी और लोकल माफिया के बड़े-बड़े साइबर स्कैम सेंटर चल रहे हैं। यहाँ फर्जी नौकरी और कॉल सेंटर फ्रॉड का बड़ा नेटवर्क है। 3. पहचान छिपाना बेहद आसानः थाईलैंड में हर साल करोड़ों विदेशी टूरिस्ट आते हैं। इस भारी भीड़ में खुद को टूरिस्ट बताकर छिपना आसान हो जाता है। 4. अंतरराष्ट्रीय क्रिमिनल नेटवर्कः भारतीय अपराधी वहां जाकर चीनी, पाकिस्तानी या लोकल गेंगस्टर के साथ हाथ मिला लेते हैं और क्रिप्टोकरेंसी व दुबई जैसे लोकेशन से क्रिप्टो ट्रांजेक्शन के जरिए रंगदारी वसूलते हैं। 5. सस्ते टूर के नाम पर जालसाजीः हाल के दिनों में भारत के ही कुछ अपराधी गैंग सस्ते टूर पैकेज का झांसा देकर भारतीयों को थाईलैंड बुलाते हैं और फिर उन्हें बंधक बनाकर उनके परिजनों से रंगदारी वसूलते हैं।

अपराधी पीड़ितों से क्रिप्टोकरेंसी में फिरौती क्यों मांगते हैं-छद्म नाम और पहचान का न होना- बैंक अकाउंट खोलने के लिए आधार, पैन या पासपोर्ट की जरूरत होती है, जिससे पुलिस मिनटों में अपराधी तक पहुंच सकती है। लेकिन क्रिप्टो वॉलेट बनाने के लिए किसी आईडी या नाम की जरूरत नहीं होती।

यह केवल एक 32-अक्षर के रैंडम कोड जैसा दिखता है, जिससे वॉलेट के असली मालिक का नाम पता लगाना लगभग नामुमकिन होता है। किसी बैंक से कनेक्शन नहीं- बैंक ट्रांसफर में रिजर्व बैंक या कोई बैंक अथॉरिटी संदिग्ध लेनदेन को रोक सकती है या पुलिस के कहने पर खाते फ्रीज कर सकती है।

क्रिप्टो में ऐसा कोई कंट्रोलर नहीं होता। अगर एक बार क्रिप्टो किसी वॉलेट में ट्रांसफर हो गया, तो दुनिया की कोई भी सरकार उस ट्रांजेक्शन को रोक या वापस नहीं करा सकती।

राजा मर्डर केस- सोनम रघुवंशी फिर गई जेल, शिलॉन्ग कोर्ट में सरेंडर
सुप्रीम कोर्ट बोला था- तकनीकी खामी के आधार पर जमानत देना सही नहीं

इंदौर। इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी

हत्याकांड में मुख्य आरोपी सोनम रघुवंशी ने बुधवार को मेघालय के शिलॉन्ग कोर्ट में सरेंडर कर दिया। उसे जेल भेज दिया गया। सुप्रीम कोर्ट ने 23 जुलाई को सोनम की जमानत रद्द करते हुए उसे तीन हफ्ते के भीतर संबंधित अदालत में सरेंडर करने का निर्देश दिया था। ये अवधि पूरी होने से पहले ही सोनम सरेंडर करने कोर्ट पहुंच गई। सोनम के सरेंडर पर राजा के भाई विपिन रघुवंशी ने कहा- मैं मेघालय सरकार को धन्यवाद देता हूं। उनकी वजह से आज हमें न्याय मिलने की उम्मीद जगी है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था- जमानत देकर गलती की- इससे पहले 23 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट ने सोनम को तीन हफ्ते में सरेंडर करने का आदेश दिया था। कोर्ट ने कहा था- हाईकोर्ट और ट्रायल कोर्ट ने गिरफ्तारी के आधारों की जानकारी दिए जाने में कथित खामियों के आधार पर जमानत देकर गलती की थी। इसके साथ ही कोर्ट ने पुलिस को निर्देश दिया था कि मामले का ट्रायल 6 महीने के भीतर पूरा किया जाए। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया था कि अगर तय अवधि में ट्रायल पूरा नहीं होता है तो सोनम रघुवंशी दोबारा जमानत के लिए आवेदन कर सकती है। गिरफ्तारी के आधार बताए गए थे, इसलिए जमानत गलत- सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि संविधान के अनुच्छेद 22(1) के तहत गिरफ्तारी के आधार की जानकारी देना अनिवार्य है, लेकिन इस मामले में गिरफ्तारी के आधार बताने में पूरी तरह नाकामी नहीं हुई थी। कोर्ट के अनुसार, गिरफ्तारी के आधार बिल्कुल न बताना और उनमें कुछ जानकारियों का अपर्याप्त होना, दोनों अलग-अलग स्थितियां हैं। इसलिए केवल तकनीकी कमी के आधार पर जमानत देना उचित नहीं था। जमानत पर बाहर रहना ट्रायल को प्रभावित कर सकता है-कोर्ट ने यह भी कहा था कि सोनम ने मजिस्ट्रेट के सामने गिरफ्तारी के आधार और संबंधित दस्तावेज मिलने की पुष्टि की थी। यदि गिरफ्तारी की प्रक्रिया में कोई कमी भी हो, तब भी जांच एजेंसी जरूरत पड़ने पर दोबारा गिरफ्तारी कर सकती है। जस्टिस एमएम सुंदरेशन और जस्टिस पीबी वरले की बेंच ने कहा था कि मेरिट के आधार पर सोनम की जमानत याचिकाएं पहले ही खारिज हो चुकी हैं और मुकदमे की सुनवाई शुरू हो गई है। ऐसे में इस चरण पर आरोपी का जमानत पर बाहर रहना ट्रायल को प्रभावित कर सकता है। इन्हीं टिप्पणियों के साथ कोर्ट ने हाईकोर्ट का जमानत आदेश रद्द करते हुए सोनम को तीन सप्ताह के भीतर आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया था। इस मामले में मेघालय सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने पक्ष रखा।

सरकार ने माना- ई-20 पेट्रोल से बीएस-3 गाड़ियों को नुकसान, राज्यसभा में गडकरी बोले- कुछ रबर पार्ट्स बदलने पड़ सकते हैं, इंजन बदलने की आवश्यकता नहीं

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने बुधवार को पहली बार माना कि ई-20 पेट्रोल (20फीसदी एथेनॉल मिश्रित पेट्रोल) इस्तेमाल करने से गाड़ियों को नुकसान पहुंच

सकता है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने राज्यसभा में लिखित जवाब में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा- बीएस-3 मानक वाली कुछ पुरानी गाड़ियों में ई-20 के कारण कुछ रबर पार्ट्स और गैस्केट बदलने पड़ सकते हैं। ये गाड़ियां मुख्य रूप से 2005 से 2016 के बीच बने हैं। ये पार्ट्स नियमित सर्विसिंग के दौरान आसानी से बदले जा सकते हैं। गडकरी ने कहा कि स्टडीज में ई-20 से गाड़ियों की कुल परफॉर्मेंस या टिकाऊपन पर कोई बड़ा असर नहीं पाया गया है। उन्होंने यह कहा कि इन गाड़ियों के इंजन में किसी तरह का बदलाव कराने की जरूरत नहीं है। यह पहली बार है, जब गडकरी ने इस तरह की बात कही है। नितिन गडकरी केंद्रीय परिवहन मंत्री- बीएस-3 गाड़ियों में ईंधन पाइप, सील, ओ-रिंग और अन्य रबर से बने कुछ हिस्सों को बदलने की जरूरत पड़ सकती है, क्योंकि एथेनॉल मिले पेट्रोल का असर पुराने रबर कंपोनेंट्स पर पड़ सकता है। गडकरी बोले- माइलेज सिर्फ ईंधन पर निर्भर नहीं करता-उन्होंने बताया कि इंडियन ऑयल, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोलियम, सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्यूफैक्चरर्स (सियाम) व ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने दोपहिया-चारपहिया वाहनों पर ई-20 ईंधन की स्टडी की थी। गडकरी ने यह भी कहा कि वाहन का माइलेज सिर्फ ईंधन पर निर्भर नहीं करता, बल्कि ड्राइविंग स्टाइल, सड़क की स्थिति, रखरखाव और अन्य कारकों से भी प्रभावित होता है। इसका इस्तेमाल दुनिया में एक सदी से ज्यादा समय से हो रहा है। पार्ट्स कितने अंतराल में बदलना पड़ेंगे? कोई तय समय या किलोमीटर नहीं है। जब आप रूटीन सर्विसिंग करवाएंगे, उसी दौरान घिसावट, रिसाव या खराबी मिलने पर बदले जाएंगे। पार्ट्स बदलने की जरूरत क्यों? एथेनॉल पुराने रबर को समय के साथ सख्त, मुलायम या फुला सकता है। पहले रबर एथेनॉल

के रबर कंपोनेंट, इंजेक्टर सील। ये पार्ट्स इंजन में होते हैं? नहीं। अधिकांश रबर पार्ट फ्यूल सिस्टम में होते हैं। किन गाड़ियों के पार्ट्स बदलने पड़ सकते हैं?यूरो-4 से नीचे के जितने भी व्हीकल्स हैं, उनमें जरूरत पड़ सकती है। संसद में पेश जवाब के मुताबिक, 1 अप्रैल 2005 से लागू बीएस-3 मानक के तहत 2016 से पहले बने दोपहिया और चारपहिया वाहन इसके दायरे में हैं। यह गाड़ी और मॉडल पर निर्भर है। मर्सिडीज में महंगा, तो मारुति सस्ता पड़ सकता है।दोपहिया में 500 से 1500 रुपए और फोरव्हीलर में 2 हजार से 8 हजार तक खर्च आ सकता है। वो सबकुछ, जो आपके लिए जानना जरूरी है-कौन-कौन से पार्ट्स बदलने पड़ सकते हैं? पाइप्स, ओ-रिंग, रबर सील, फ्यूल होज, गैस्केट, फ्यूल पंप के लंबे संपर्क के हिसाब से नहीं बनाए गए थे।

नुकसान रबर को ही या मेटल पर भी? असर रबर पार्ट्स तक सीमित है। यूरो-4 और नीचे की गाड़ी के मेटल पार्ट्स पर भी असर संभव।

ई-20 पेट्रोल डलवाने के कितने समय बाद गाड़ी दिक्कत देनी शुरू करेगी? गाड़ी चलती रहेगी, तो कोई खराबी नहीं आएगी।

बस, उसका मेंटेनेंस बढ़ाना होगा। कार-बाइक दोनों पर समान असर पड़ेगा? दोनों में असर की संभावना है, लेकिन यह वाहन के डिजाइन और फ्यूल सिस्टम पर निर्भर करेगा।

जम्मू-कश्मीर और उत्तराखंड में लैंडस्लाइड, रोकी गई केदारनाथ यात्रा,हरिद्वार में कांवड़िया बहा, राजस्थान समेत 16 राज्यों में बारिश का ऑरेंज अलर्ट

जयपुर/लखनऊ/पटना।गोंडा में घाघरा नदी का जलस्तर घटने से कटान और तेज हो गया है। जम्मू-कश्मीर के राजौरी में पानी बढ़ने से दो गाड़ियां बीच धारा में फंस गईं। सूचना पर पुलिस, प्रशासन और राहत दल मौके पर पहुंचे और रेस्क्यू शुरू

अक्चमल के पास लैंडस्लाइड के बाद कारगिल-लेह नेशनल हाईवे ब्लॉक हो गया। गाड़ियों की आवाजाही रोक दी गई है।तेलंगाना के 5 जिलों में रेड अलर्ट, साइबराबाद में वर्क फ्रॉम होम की सलाह दी- आईएमडी ने गुरुवार को तेलंगाना के 5 जिलों में रेड अलर्ट जारी किया है। इनमें आदिलाबाद, कुमराम भीम आसिफाबाद, मंचरियल, निर्मल और जगतियाल के कुछ इलाके शामिल हैं। विभाग ने गुरुवार दोपहर 1 बजे से 31 जुलाई की सुबह 8.30 बजे तक तेज हवाओं के साथ भारी बारिश का अनुमान जताया है। साइबराबाद ने 'वर्क फ्रॉम होम' की सलाह दी है। असम में बाढ़ प्रभावित 13000 परिवार 11 दिन बाद भी अंधेरे में असम के बाढ़ प्रभावित इलाकों में करीब 13 हजार परिवारों के घरों में अभी भी बिजली नहीं है। राज्य में आई भीषण बाढ़ के 11 दिन बाद भी ये परिवार अंधेरे में रहने को मजबूर हैं। बाढ़ के कारण कई जिलों में भारी तबाही हुई थी और घरों में कीचड़ भर गया था। प्रभावित इलाकों में गौरीसागर, शिवसागर, नजीरा, अमगुरी और डेमों शामिल हैं। 19 जुलाई की सुबह से नागालैंड और ऊपरी असम के जिलों में हुई भारी बारिश ने तीन जिलों में भारी तबाही मचाई थी। बाढ़ के कारण मरने वालों की संख्या बढ़कर 78 हो गई है और तीन लाख से ज्यादा लोग अभी भी जलभराव की समस्या से जूझ रहे हैं। हरिद्वार में सूखी नदी में आई बाढ़, 2 गाड़ियां फंसी- उत्तराखंड के हरिद्वार में गुरुवार को करीब दो घंटे की मूसलाधार बारिश से कई निचले इलाकों में जलभराव हो गया। खड़खड़ी क्षेत्र के पास सूखी नदी में अचानक किया। पिथौरागढ़ में पहाड़ से जीप पर गिरे पत्थर, कूदकर भागे लोग- पिथौरागढ़ के धारचूला में तीनतोला-गस्कू सड़क पर पहाड़ी से अचानक मलबा और बड़े-बड़े बोल्डर गिरने से एक यात्री जीप पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। चालक और एक यात्री ने समय रहते वाहन से कूदकर अपनी जान बचा ली। घटना के बाद मार्ग पर आवागमन जोखिमभरा हो गया है। अलकनंदा खतरे के निशान से ऊपर बह रही- उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में भारी बारिश के बाद अलकनंदा और मंदाकिनी नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। इससे आसपास के इलाकों में पानी भर गया है। कई मंदिर भी डूब गए हैं। उत्तराखंडः उत्तरकाशी में बड़ा पत्थर रोड पर गिरा- उत्तरकाशी के स्याना चट्टी क्षेत्र में पहाड़ी से भारी बोल्डर और मलबा गिरा। कुपड़ा गांव के पास एक बड़ा पत्थर तेज रफ्तार से सड़क तक आ पहुंचा, हालांकि उस समय कोई राहगीर मौजूद नहीं था। मध्य प्रदेश में मानसून एक बार फिर सक्रिय हो गया है। प्रदेश में मानसून ट्रफ, साइक्लोनिक सर्कुलेशन और शियर जोन समेत तीन मजबूत मौसम सिस्टम एक्टिव हैं। मौसम विभाग ने गुरुवार को उज्जैन, सागर समेत 17 जिलों के लिए अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार, 2 अगस्त को सात जिलों में तेज बारिश का अनुमान है। हालांकि इस दिन देवघर, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़ और साहेबगंज में भारी बारिश होने की संभावना है। यूपी के बलिया में सरयू नदी का पानी गांवों में घुस गया है। करीब 100 परिवार घर छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर चले गए हैं। और पेड़ नदी में समा चुके हैं। कटान के डर से लोग पलायन करने को मजबूर हैं। बंगाल की खाड़ी में बने डीप डिप्रेशन सिस्टम के असर से राजस्थान में लगातार बरसात हो रही है। इस सिस्टम का सर्वाधिक असर गुरुवार से देखने को मिलेगा। आज 11 जिलों में भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। वहीं, बीते 24 घंटे में जयपुर, प्रतापगढ़, दौसा और अलवर में एक इंच तक बरसात हुई। बिहार के 5 जिलों में गुरुवार को हल्की बारिश हो सकती है। लेकिन 33 जिलों में मौसम सामान्य रहेगा। इन जिलों में 40किमी/घंटा की रफ्तार से हवा भी चल सकती है। पिछले 24 घंटे में खगड़िया में बारिश हुई। पटना समेत कई जिलों में हल्की हवा चली। मौसम का हालः-31 जुलाईः-जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड, हिमाचल, मध्य प्रदेश, गुजरात रीजन, पूर्वी राजस्थान, मध्य महाराष्ट्र, कर्नाटक में भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। विदर्भ में रेड अलर्ट है। अरुणाचल, असम, मेघालय, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, छत्तीसगढ़, कोंकण-गोवा में भारी बारिश का यलो अलर्ट है। 1 अगस्तः- गुजरात रीजन में बारिश का रेड अलर्ट है। पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, मध्य महाराष्ट्र, कोंकण-गोवा, कर्नाटक में बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड, हिमाचल, पश्चिमी राजस्थान, बिहार, असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नगालैंड, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, विदर्भ बारिश का यलो अलर्ट है।

मौत के 17 घंटे बाद जिंदा हुई 65-साल की महिला,आगरा में अचानक बोली- मैं जिंदा हूं, अंतिम संस्कार की हो रही थी तैयारी

आगरा। आगरा में मौत के करीब 17 घंटे बाद 65 वर्षीय महिला जिंदा हो गईं। अचानक से दामाद का हाथ पकड़ लिया। कहा- 'मैं जिंदा हूं। मुझे कहां ले जा रहे।' यह सुनते ही घर में अफरा-तफरी मच गई। परिजन ने उन्हें तुरंत एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उनका इलाज चल रहा है। मामला जिला मुख्यालय से 8 किमी दूर ट्रांस यमुना थाना क्षेत्र का है। दरअसल, महिला लीवर संबंधी बीमारी से पीड़ित थीं। बरेली के एक निजी अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। डॉक्टर ने बुधवार तड़के 3 बजे महिला को मृत घोषित कर दिया था। देर शाम को शव घर लाया गया। रिश्तेदार और परिचित अंतिम दर्शन के लिए जुटे थे। इसी दौरान दामाद अंतिम प्रणाम करने पहुंचे। जैसे ही उन्होंने सास के पैर छुए, महिला के शरीर में हलचल हुई और वह जीवित हो गईं। दरअसल श्रीनगर कॉलोनी निवासी शीला देवी के पति हरिओम माहौर का निधन हो चुका है। वह अपने बेटे सुनील माहौर के परिवार के साथ रहती हैं। उनका दूसरा बेटा संजीव माहौर बदायूं के एक निजी अस्पताल में कार्यरत है। करीब 20 दिन पहले शीला देवी इलाज के लिए उसके पास बदायूं गई थीं। इसके बाद बेटे ने सोमवार को उन्हें बरेली के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। मंगलवार को उनकी हालत बिगड़ने पर वेंटिलेटर पर रखा गया। बुधवार तड़के करीब 3

बजे डॉक्टरों ने शीला देवी को मृत घोषित कर दिया। इसके बाद बेटा एंबुलेंस से उनका शव लेकर शाम करीब 7 बजे आगरा स्थित घर पहुंचा। शव को घर के एक कमरे में जमीन पर रखा गया। अंतिम संस्कार की तैयारियां शुरू हो गईं। फूल-मालाएं और अन्य सामान आ गया था, जबकि रिश्तेदार अंतिम विदाई के लिए पहुंचने लगे थे। अचानक से दामाद का हाथ पकड़ लीं, बोलीं- मैं जिंदा हूं-रात करीब 8 बजे उनके दामाद ने पैर छुए। इसी दौरान शीला देवी के शरीर में हलचल होने लगी। अचानक से उन्होंने दामाद का हाथ पकड़ लिया। कहा, 'मुझे कहां लेकर जा रहे हो? तुम सब रो क्यों रहे हो? मैं जिंदा हूं, मरी नहीं हूं।' यह सुनते ही परिवार के लोग हैरान रह गए। बिना देर किए परिजन उन्हें आगरा के एक निजी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां उनका उपचार चल रहा है। पड़ोसी धर्मपाल ने बताया कि एंबुलेंस से शव घर लाने के बाद उसे कमरे में रखा गया था। इसी दौरान उनकी बेटी और दामाद पहुंचे। दामाद ने जैसे ही उनके पैर छुए, इसी दौरान उनकी सांसें लौट आईं।

हेल्दी वोकल कॉर्ड्स के 9 टिप्स

आवाज में अचानक बदलाव किसी बीमारी का इशारा तो नहीं, ये बदलाव दिखे तो तुरंत डॉक्टर से मिलें

नयी दिल्ली। हम आवाज को सिर्फ कम्युनिकेशन का जरिया मानते हैं, लेकिन यह हमारी सेहत का एक अहम संकेत भी है। आमतौर पर सर्दी-जुकाम या थकान होने पर आवाज में हल्का बदलाव होता है। कई बार आवाज में बदलाव डायबिटीज, थायरॉइड, हार्ट डिजीज या न्यूरोलॉजिकल प्रॉब्लम्स का इशारा भी हो सकता है। दरअसल आवाज ब्रेन, लंग्स और वोकल कॉर्ड्स के कोऑर्डिनेशन से बनती है। इसलिए इनमें किसी भी गड़बड़ी का असर तुरंत आवाज पर दिखता है। ऐसे में सवाल ये है कि आवाज में हो रहे कौन-से बदलाव सामान्य हैं और किन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए? आज जानेंगे कि आवाज कैसे सेहत का हाल बताती है। साथ ही जानेंगे कि- आवाज में किस तरह के बदलाव गंभीर हो सकते हैं? आवाज में कौन-से बदलाव किस बीमारी का संकेत हैं? डॉ. राजुल अग्रवाल डायरेक्टर, न्यूरोलॉजी, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ और समझेंगे अच्छे से सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- हमारी आवाज शरीर के किन ऑर्गन्स पर निर्भर करती है? जवाब- आवाज एक न्यूरो-मस्कुलर और रेस्पिरेटरी प्रक्रिया है, जिसमें कई अंग मिलकर काम करते हैं। ब्रेनः बोलने का कंट्रोल सेंटर है, जो सांस, मसल्स और आवाज को निर्देश देता है। फेफड़ेः हवा का दबाव बनाते हैं, जो आवाज की ऊर्जा का मुख्य सोर्स है। वोकल कॉर्ड्स (लैरिंक्सः हवा के गुजरने पर कंपन करते हैं और आवाज पैदा करते हैं। जीभ, होंठ और दांतः आवाज को स्पष्ट शब्दों में बदलते हैं, इसे आर्टिक्युलेशन कहते हैं। नाक और गलाः आवाज की गूंज, टोन और क्वालिटी तय करते हैं। सवाल- क्या आवाज में अचानक बदलाव किसी छिपी हुई हेल्थ कंडीशन का संकेत हो सकता है? जवाब- आवाज में अचानक बदलाव अंदरूनी समस्या का संकेत हो सकता है। हमारी आवाज ब्रेन, नर्व्स और रेस्पिरेटरी सिस्टम से जुड़ी होती है। इसलिए कई बार बदलाव का कारण गंभीर भी हो सकता है। सवाल- आवाज में किस तरह के बदलाव कॉमन हैं? जवाब- आवाज में हल्के बदलाव सर्दी-जुकाम, एलर्जी, डिहाइड्रेशन या ज्यादा बोलने के कारण हो सकते हैं। आवाज बैठना (होर्सनेसः): आवाज भारी या भर्राई लगती है।आवाज कमजोर होनाः आवाज धीमी या कम स्पष्ट हो जाती है। पिच में बदलावः आवाज ऊंची या नीची हो सकती है। फुसफुसाती या टूटी आवाजः सांस के साथ आवाज टूट सकती है। बोलने की स्पीड बदलनाः कभी तेज, कभी धीमी हो सकती है। खराश या म्यूकसः गले में बलगम से स्पष्टता कम हो जाती है। कुछ बदलाव गंभीर बीमारी के शुरुआती संकेत हो सकते हैं, इसलिए इन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। नीचे ग्राफिक में दिए लक्षण स्ट्रोक, न्यूरोलॉजिकल डिजीज या कैंसर से जुड़े हो सकते हैं। इसमें तुरंत डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी है। ऐसे बदलाव हो तो डॉ से सलाह ले अचानक बोली लड़खड़ाना। शब्द स्पष्ट न निकलना। आवाज कमजोर, धीमी होना। एक ही टोन में बोलना। आवाज का बार-बार टूटना। खांसी के साथ खून आना। निगलने सास लेने में दर्द, खराश, बोलने में थकान। 2-3 हफ्ते से ज्यादा होर्सनेसः लगातार भारी या बैठी आवाज गले की समस्या का संकेत हो सकती है। अचानक बोली लड़खड़ानाः स्ट्रोक या न्यूरोलॉजिकल समस्या का संकेत हो सकता है। बोलने पर खांसी के साथ खूनः गले या फेफड़ों की गंभीर बीमारी का रिस्क हो सकता है। कमजोर या मोनोटोन आवाजः नर्सों या ब्रेन से जुड़ी समस्या का संकेत हो सकता है। सांस लेने में दिक्कतः रेस्पिरेटरी सिस्टम की समस्या का संकेत है। सवाल- क्या आवाज में आए बदलाव को आइडेंटिफाई कर बीमारियां भी डायग्नोज की जा सकती हैं? जवाब- हां, आवाज में बदलाव का एनालिसिस कर कुछ बीमारियों के संकेत पहचाने जा सकते हैं। हाल के वर्षों में वॉइस एनालिसिस और एआई टेक्नीक्स पर तेजी से रिसर्च हुई है। ये टेक्नीक्स आवाज की पिच, स्पीड और कंपन का एनालिसिस करती हैं। आवाज के कंपन से कोरोनरी आर्टरी डिजीज के रिस्क के संकेत मिल सकते हैं। स्पीच पैटर्न से डिमेंशिया और पार्किंसन के शुरुआती लक्षण पहचाने जा सकते हैं। हालांकि, यह केवल स्क्रीनिंग टूल है। किसी भी बीमारी का अंतिम डायग्नोसिस क्लिनिकल टेस्ट और डॉक्टर की सलाह से ही किया जाता है। सवाल- क्या मेंटल हेल्थ से जुड़ी परेशानी होने पर भी आवाज बदलती है? जवाब- हां, मेंटल हेल्थ का आवाज पर सीधा असर पड़ता है। भावनाएं और स्ट्रेस ब्रेन फंक्शनिंग की स्पीड को बदलते हैं, जिससे आवाज की टोन और रिदम प्रभावित होती है। डिप्रेशनः आवाज धीमी, सपाट और कम ऊर्जा वाली हो जाती है। एंग्जाइटीः आवाज तेज, ऊंची पिच और कांपती हुई लग सकती है। क्रॉनिक स्ट्रेसः सांस तेज चलती है, जिससे व्यक्ति जल्दी-जल्दी बोलता है। स्किजोफ्रेनियाः आवाज टूटी-फूटी या मोनोटोन हो सकती है। ये बदलाव लंबे समय तक बने रहें तो मेंटल हेल्थ एक्सपर्ट से सलाह जरूर लें। सवाल- पार्किंसन, अल्जाइमर्स जैसी न्यूरोलॉजिकल बीमारियों में आवाज से किस तरह के संकेत मिलते हैं? जवाब- न्यूरोलॉजिकल बीमारियों से ब्रेन और नर्व्स प्रभावित होती हैं, जिससे कम वॉल्यूम और सांस भारी होती है। वोकल कॉर्ड्स में हल्का कंपन (ट्रेमर) भी देखा जा सकता है। आवाज की स्पष्टता कम हो जाती है और शब्द साफ नहीं निकलते। अल्जाइमर्स/डिमेंशियाः बोलने की स्पीड धीमी हो जाती है और व्यक्ति बार-बार रुकता है। ब्रेन को शब्द खोजने में कठिनाई होती है, वाक्य छोटे और सरल हो जाते हैं। बातचीत में दोहराव बढ़ सकता है। सवाल- क्या आवाज में हर बदलाव बीमारी का संकेत होता है? जवाब- नहीं, ज्यादातर बदलाव अस्थायी कारणों से होते हैं और सही देखभाल से ठीक हो जाते हैं। सर्दी-जुकाम या एलर्जीः अस्थायी होर्सनेस (आवाज बैठना) कॉमन है। डिहाइड्रेशनः गला सूखने से आवाज भारी हो सकती है। ज्यादा बोलना/चिल्लानाः वोकल कॉर्ड्स पर दबाव पड़ने से आवाज बदलती है। कैफीन या अल्कोहलः गले को ड्राई करके आवाज प्रभावित कर सकते हैं। सवाल- क्या उम्र बढ़ने के साथ आवाज में बदलाव होना स्वाभाविक है? जवाब- हां, उम्र बढ़ने के साथ आवाज में बदलाव होना सामान्य है। इसे मेडिसिनल लैंग्वेज में 'प्रेस्बीफोनिया' कहा जाता है। आवाज में ताकत कम हो सकती है। हल्का कंपन महसूस हो सकता है। पहले की तुलना में आवाज धीमी हो जाती है।लंबे समय तक बोलने पर थकावट होती है। फेफड़ों की क्षमता घटने से ऐसा होता है। सवाल- अगर आवाज 2-3 हफ्ते से ज्यादा समय तक खराब है तो कौन-से टेस्ट जरूरी होते हैं? जवाब- यह किसी गंभीर समस्या का संकेत हो सकता है। सही कारण जानने के लिए ईएनटी (ईएनटी) एक्सपर्ट द्वारा कुछ जांच जरूरी होती है। लैरिंगोस्कोपीः कैमरे से वोकल कॉर्ड्स का स्ट्रक्चर और कंडीशन देखी जाती है।वीडियो स्ट्रोबोस्कोपीः वोकल कॉर्ड्स के कंपन और फंक्शनिंग का एनालिसिस होता है। ब्लड टेस्टः थायरॉइड या अन्य हॉर्मोन असंतुलन की जांच की जाती है। न्यूरोलॉजिकल रिव्यूः नर्व्स या ब्रेन से जुड़ी समस्या का पता लगाने के लिए यह टेस्ट होता है। पल्मोनरी टेस्टः रेस्पिरेटरी सिस्टम की स्थिति जांचने के लिए यह टेस्ट होता है।सवाल- आवाज और वोकल कॉर्ड को हेल्दी रखने के लिए क्या करें? जवाब- वोकल कॉर्ड की सेहत डेली लाइफस्टाइल की आदतों पर निर्भर करती है, सही देखभाल से समस्याएं रोकी जा सकती हैं.हल्की खराश है या आवाज बैठ गई है तो आमतौर पर कुछ दिनों में ठीक हो जाती हैं। लेकिन अगर ये बदलाव लंबे समय तक रहें या अन्य लक्षण के साथ हों, तो डॉक्टर से सलाह जरूरी है। जैसेकि- 2-3 हफ्ते से ज्यादा होर्सनेस रहे। खांसी के साथ खून आए। निगलने में दर्द/कठिनाई हो। सांस लेने में दिक्कत हो।अचानक बोली लड़खड़ाए। बहुत कमजोर या मोनोटोन आवाज हो।

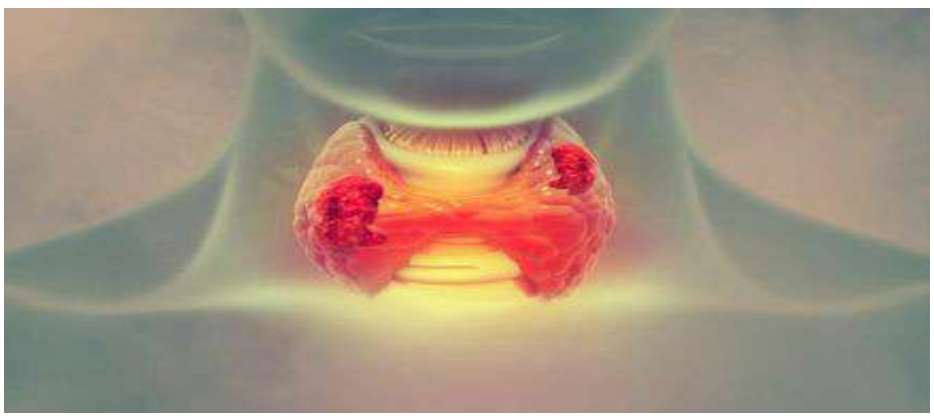

खूबसूरती के लिए इंजेक्शन लगवाना, सीडीएससीओ ने बताया गैरकानूनी, नर्व डैमेज और एलर्जिक रिएक्शन का रिस्क, इससे दूर रहें

मुंबई। आजकल 'इंस्टेंट ग्लो' की चाह में कॉस्मेटिक इंजेक्शन और आईवी ड्रिप्स का ट्रेंड बढ़ा है। सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स, मॉडल्स और सेलिब्रिटीज को देखकर लोग ये ब्यूटी ट्रेंड्स अपना रहे हैं। लेकिन इंजेक्शन' कोई ऑफिशियल मेडिकल टर्म नहीं है। यह आम बोलचाल में इस्तेमाल होता है। सवाल- क्या ग्लो इंजेक्शन और कॉस्मेटिक इंजेक्शन एक ही चीज है? जवाब- नहीं, ये एक ही चीज नहीं हैं। ग्लो इंजेक्शन, मेडिकल कंडीशन्स (जैसे एंटीऑक्सिडेंट सपोर्ट) के लिए इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन ब्यूटी या स्किन लाइटनिंग के लिए इसका इस्तेमाल अप्रूव्ड नहीं है। सवाल- कॉस्मेटिक इंजेक्शन के क्या साइड इफेक्ट्स हो सकते का भी असर होता है। कॉस्मेटिक इंजेक्शन एक मेडिकल प्रोसीजर है। इसमें इन्फेक्शन, एलर्जी या नर्व डैमेज जैसे जोखिम पूरी तरह खत्म नहीं होते। इसलिए सिर्फ सेलिब्रिटी ट्रेंड के आधार पर इसे सुरक्षित

यह कितना रिस्की हो सकता है, कम ही लोग जानते हैं। हाल ही में 'सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन' (सीडीएससीओ) ने साफ किया है कि कॉस्मेटिक प्रोडक्ट्स को इंजेक्शन के रूप में इस्तेमाल करना नियमों के खिलाफ है और ऐसी प्रैक्टिसेज पर सख्ती जरूरी है। इसलिए जानेंगे कि- कॉस्मेटिक इंजेक्शन क्या होते हैं? लोग इन्हें क्यों लेते हैं? इनके क्या साइड इफेक्ट्स हैं? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. विनोद विज, कंसल्टेंट, प्लास्टिक एंड कॉस्मेटिक सर्जरी, अपोलो हॉस्पिटल, नवी मुंबई जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- कॉस्मेटिक इंजेक्शन क्या होते हैं? जवाब- यह एक नॉन-सर्जिकल ब्यूटी ट्रीटमेंट है। इसमें स्किन या बॉडी में दवाएं, केमिकल्स या बायोलॉजिकल सब्सटेंस को इंजेक्ट करके चेहरे को खूबसूरत बनाया जाता है। इसमें खासतौर पर स्किन की बनावट को बदला जाता है। इनका इस्तेमाल झुर्रियां कम करने, स्किन को टाइट करने, वॉल्यूम बढ़ाने या ग्लो के लिए किया जाता है। सवाल- लोग कॉस्मेटिक इंजेक्शन क्यों लगवाते हैं? जवाब- आजकल इंस्टेंट ब्यूटी की चाहत में कॉस्मेटिक इंजेक्शन का ट्रेंड बढ़ रहा है। इंस्टेंट ग्लो और ब्राइटनिंग के लिए। फेशियल शेप सुधारने के लिए। स्किन टोन इवन करने के लिए। एंटी-एजिंग के लिए। ब्यूटी इंडस्ट्री में कई तरह के इंजेक्टेबल ट्रीटमेंट ट्रेंड में हैं। इन्हें लोग एंटी-एजिंग, ग्लो या फेस शेप सुधारने जैसे अलग-अलग जरूरतों के लिए चुनते हैं। पॉपुलर कॉस्मेटिक इंजेक्शन्स-ग्लूटाथियोन इंजेक्शन, डर्मल फिलर्स, फिलर्स, विटामिन ग्लो ड्रिप, बोटॉक्स, स्किन ब्राइटनिंग इंजेक्शन, फैट डिसॉल्विंग, इंजेक्शन। सवाल- 'ग्लो इंजेक्शन' क्या होता है? जवाब- यह ऐसा ट्रीटमेंट है, जिसमें अंदर से स्किन का रंग निखारने या टोन हल्का करने का दावा किया जाता है। इसमें आमतौर पर ग्लूटाथियोन (नेचुरल एंटीऑक्सिडेंट), विटामिन-सी या अन्य एंटीऑक्सिडेंट्स को इंजेक्शन/आईवी ड्रिप के जरिए शरीर में दिया जाता है। हालांकि, 'ग्लो इंजेक्शन' का असर कितने समय तक रहता है? जवाब- इनका असर आमतौर पर कुछ हफ्तों से कुछ महीनों तक रहता है। शुरुआत में असर दिखने में 3-6 हफ्ते लग सकते हैं। अगर असर दिखता है, तो यह आमतौर पर 2-3 महीने तक टिकता है। ट्रीटमेंट बंद करते ही स्किन धीरे-धीरे पहली स्थिति में लौट सकती है। सवाल- क्या कॉस्मेटिक इंजेक्शन एक बार लेने के बाद बार-बार लेना पड़ता है? जवाब- हां, आमतौर पर बार-बार लेना पड़ता है, क्योंकि इसका असर अस्थायी होता है। सवाल- सीडीएससीओ ने कॉस्मेटिक इंजेक्शन को लेकर क्या कहा है? जवाब- सीडीएससीओ ने स्पष्ट किया है कि किसी भी कॉस्मेटिक प्रोडक्ट को इंजेक्शन के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। कॉस्मेटिक्स केवल स्किन पर लगाने के लिए होते हैं, न कि शरीर में इंजेक्ट करने के लिए। सवाल- सीडीएससीओ ने किन इंजेक्शन्स को गैरकानूनी बताया गया है? जवाब- 'ग्लो' या 'स्किन गोरा करने' के नाम पर दिए जा रहे सभी इंजेक्टेबल ट्रीटमेंट्स CDSCO के नियमों के खिलाफ हैं। इन कॉस्मेटिक प्रोडक्ट्स को इंजेक्शन के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं है। सवाल- क्या भारत में ग्लूटाथियोन इंजेक्शन कॉस्मेटिक इस्तेमाल के लिए अप्रूव्ड नहीं हैं? क्या डॉक्टर ऑफ-लेबल इनका इस्तेमाल कर रहे हैं? जवाब- हां, भारत में ग्लूटाथियोन इंजेक्शन को 'स्किन व्हाइटनिंग/ग्लो' के लिए मंजूरी नहीं है। इन्हें कुछ हैं? जवाब- मेडिकल प्रोसीजर होने से इसके कई शार्ट और लॉन्ग टर्म साइड इफेक्ट्स हो सकते हैं। कॉस्मेटिक इंजेक्शन के साइड इफेक्ट्स- सुन्नपन, सांस लेने में दिक्कत, रेडनेस, सूजन, ब्लीडिंग, इंफेक्शन एलर्जिक रिएक्शन,चेहरे में टेढ़ापन, मसल वीकनेस, वेस्कुलर ऑक्लूजन सवाल- क्या इससे इन्फेक्शन हो सकता है? जवाब- हां, अगर-अनट्रेंड या अनक्वालिफाइड व्यक्ति इंजेक्शन दे। सुई या उपकरण रीयूज किए जाएं। इंजेक्शन के बाद स्किन की सही केयर न की जाए तो इन्फेक्शन का रिस्क बढ़ता है। सवाल- क्या इससे नर्व डैमेज का रिस्क भी हो सकता है? जवाब- हां, अगर- इंजेक्शन गलत जगह लगे। गलत तरीके से दिया जाए। इंजेक्शन सीधे नर्व के पास या अंदर लग जाए।दवा गलत लेयर में चली जाए। चेहरे की एनाटॉमी की सही समझ न हो तो नर्व डैमेज (नसों को नुकसान) का रिस्क हो सकता है। सवाल- क्या इससे फेशियल पैरालिसिस भी हो सकता है? जवाब- हां, कुछ कंडीशंस में फेशियल पैरालिसिस का रिस्क हो सकता है। जैसे- इंजेक्शन फेशियल नर्व के पास लग जाए।दवा गलत जगह फैलकर नर्व सिग्नल ब्लॉक कर दे। अनट्रेंड व्यक्ति द्वारा गलत तकनीक से इंजेक्शन लगाए जाए। हालांकि ये काफी रेयर होता है। सवाल- क्या ये इंजेक्शन जानलेवा भी हो सकता है? जवाब- हां, खतरा तब बढ़ता है, जब- एलर्जिक रिएक्शन हो जाए। वस्कुलर ऑक्लूजन (ब्लड वेसल्स का ब्लॉक होना) हो जाए। गंभीर इन्फेक्शन हो जाए। गलत दवा/ओवरडोज ले लिया जाए। सवाल- लोगों का मानना है कि सारे सेलिब्रिटीज ये ट्रीटमेंट करवाते हैं। तो ये अनसेफ कैसे हो सकता है? जवाब- सेलिब्रिटीज आमतौर पर अनुभवी डॉक्टर और हाई-स्टैंडर्ड मेडिकल सेटअप में ये प्रक्रियाएं कराते हैं। जबकि आम लोग अनट्रेंड लोगों या असुरक्षित जगहों पर इन्हें करवा लेते हैं, इससे रिस्क बढ़ जाता है। इसके अलावा- सोशल मीडिया पर दिखने वाला 'ग्लो' अक्सर मेकअप, फिल्टर और लाइटिंग मानना सही नहीं है। सवाल- आम लोगों के लिए ये ज्यादा खतरनाक क्यों है? जवाब- इसके कई कारण हैं, जैसे- कई लोग पार्लर से इंजेक्शन लगवा लेते हैं, जहां क्लिनिक जैसा स्टरलाइजेशन और सेफ्टी नहीं होती। मेडिकल हिस्ट्री, एलर्जी या स्किन टाइप का आंकलन नहीं होता। इंजेक्शन गलत जगह या गलत मात्रा में लग सकता है। रिएक्शन होने पर तुरंत इलाज की सुविधा नहीं होती। सही देखभाल न होने से इन्फेक्शन का रिस्क बढ़ता है। सवाल- ग्लोइंग स्किन पाने का बेस्ट तरीका क्या है? जवाब- ग्लोइंग स्किन के लिए महंगे इंजेक्शन जरूरी नहीं होते। सही स्किनकेयर, हेल्दी लाइफस्टाइल और सन प्रोटेक्शन से नेचुरल और लॉन्ग-लास्टिंग ग्लो पाया जा सकता है। सही खानपान से स्किन नेचुरली ग्लो करती है, जबकि गलत चीजें इसे डल और एक्ने-प्रोन बना सकती हैं। 'इंस्टेंट ग्लो' का आकर्षण भले ही बढ़ रहा हो, लेकिन सेफ और लंबे समय तक टिकने वाला निखार केवल सही स्किनकेयर, बैलेंस्ड डाइट, सन प्रोटेक्शन और हेल्दी लाइफस्टाइल से ही संभव है।

स्वत्वाधिकारी
एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।